श्री नवलब्धि विधान

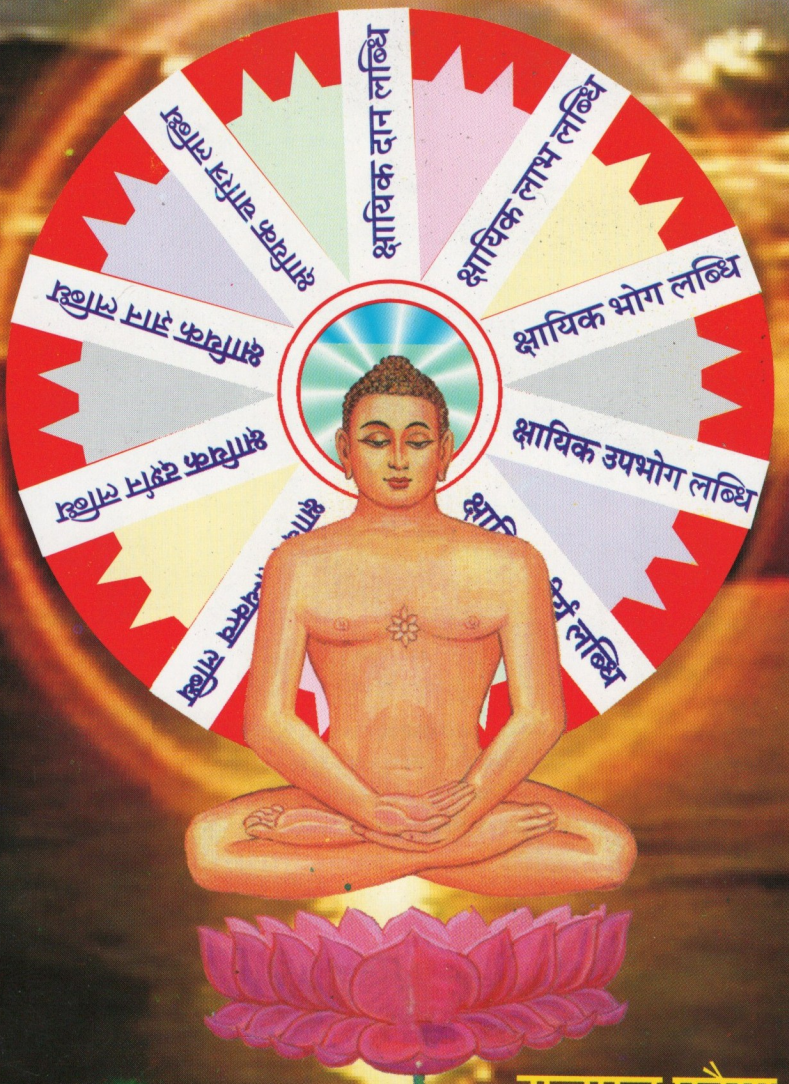

राजमल पवैया

श्री नवलब्धि विधान

रचयिता :
राजमल पवैया

प्रकाशक :
अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन
ए–4, बापूनगर, जयपुर – 302015

प्रथम अष्टम संस्करण : 11 हजार
(6 अप्रेल, 2001 से अद्यतन)
नवम् संस्करण : 1 हजार
(15 अगस्त, 2013)

योग : **12 हजार**

मूल्य : **दस रुपए**

मुद्रक :
श्री प्रिन्टर्स
मालवीयनगर जयपुर

अनुक्रमणिका

क्र.	विषय	पृष्ठ सं.
1.	मंगलाचरण	5
2.	समुच्चय पूजन	7
3.	क्षायिक दानलब्धि पूजन	12
4.	क्षायिक लाभलब्धि पूजन	18
5.	क्षायिक भोगलब्धि पूजन	24
6.	क्षायिक उपभोगलब्धि पूजन	30
7.	क्षायिक वीर्यलब्धि पूजन	37
8.	क्षायिक सम्यग्दर्शनलब्धि पूजन	44
9.	क्षायिक दर्शनलब्धि पूजन	51
10.	क्षायिक ज्ञानलब्धि पूजन	58
11.	क्षायिक चारित्रलब्धि पूजन	65
12.	महार्घ्य	72
13.	महाजयमाला	73
14.	शांतिपाठ	75
15.	क्षमापना	76

प्रकाशकीय

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन के माध्यम से कविवर राजमलजी पवैया कृत विधानों की शृंखला में श्री नवलब्धि विधान का प्रकाशन करते हुए हमें हार्दिक प्रसन्नता का अनुभव हो रहा है।

कविवर राजमलजी पवैया सिद्धहस्त लेखक हैं। उन्होंने शताधिक विधानों की रचना कर नया कीर्तिमान स्थापित किया है। श्री नवलब्धि विधान पवैयाजी की नवीनतम रचना है। इस विधान में क्षायिकभाव के नौ भेद जो नवलब्धि के नाम से जाने जाते हैं, के 81 एवं अन्य 27 अर्घ्य मिलाकर कुल 108 अर्घ्य हैं। विधान करने में आप सबको अपूर्व आनन्द प्राप्त होगा – ऐसा विश्वास है।

इस विधान के माध्यम से नवलब्धिधारक अरिहंत भगवन्तों के प्रति भक्ति-भाव तथा हर्ष-उल्लास जागृत हो और आप स्वयं भव का अभाव कर अरिहंत अवस्था प्राप्त करें – इसी भावना के साथ।

– परमात्म प्रकाश भारिल्ल

महामंत्री

अखिल भारतीय जैन युवा फैडरेशन

हमारे यहाँ प्राप्त महत्त्वपूर्ण प्रकाशन

मोक्षशास्त्र/चौबीस तीर्थंकर महापुराण
बृहद जिनवाणी संग्रह/समयसार (ज्ञायकभावप्रबोधिनि)
रत्नकरण्डश्रावकाचार/समयसार
मोक्षमार्ग प्रवचन भाग-1,2,3,4
प्रवचनसार/क्षत्रचूड़ामणि
समयसार नाटक/मोक्षमार्ग प्रकाशक
सम्यग्ज्ञानचन्द्रिका भाग 2 (पूर्वार्द्ध + उत्तरार्द्ध) एवं भाग 3
बृहद द्रव्यसंग्रह/जिनेन्द्र अर्चना
दिव्यध्वनिसार प्रवचन/नियमसार
योगसार प्रवचन/तीनलोकमंडल विधान
समयसार कलश/चिन्तन की गहराईयाँ
प्रवचनरत्नाकर भाग 1 से 11 तक
नयप्रज्ञापन/समाधितंत्र प्रवचन
पं. टोडरमल व्यक्तित्व और कर्तृत्व
समयसार अनुशीलन सम्पूर्ण भाग 1,2,3,4,5
आचार्य अमृतचन्द्र : व्यक्तित्व और कर्तृत्व
पंचास्तिकाय संग्रह/सिद्धचक्र विधान
ज्ञानस्वभाव ज्ञेयस्वभाव
भावदीपिका/कार्तिकेयानुप्रेक्षा
परमभावप्रकाशक नयचक्र
पुरुषार्थसिद्ध्युपाय/ज्ञानगोष्ठी
सूक्तिसुधा/आत्मा ही है शरण/आत्मानुशासन
संस्कार/इन भावों का फल क्या होगा
इन्द्रध्वज विधान/धवलासार
रामकहानी/गुणस्थान विवेचन
सुखी जीवन/विचित्र महोत्सव
सर्वोदय तीर्थ
सत्य की खोज/बिखरे मोती
निर्विकल्प आत्मानुभूति के पूर्व
तीर्थंकर भगवान महावीर और उनका सर्वोदय तीर्थ
श्रावकधर्मप्रकाश/कल्पद्रुम विधान
वी.वि. पाठमाला भाग 1,2,3
वी.वि. प्रवचन भाग 1 से 6 तक
तत्त्वज्ञान तरंगणी/रत्नत्रय विधान
भक्तामर प्रवचन/बारह भावना : एक अनुशीलन
धर्म के दशलक्षण/विदाई की बेला
नवलब्धि विधान/बीस तीर्थंकर विधान

पंचमेरु नंदीश्वर विधान/रत्नत्रय विधान
सुखी होने का उपाय भाग 1 से 8 तक
जैनतत्त्व परिचय/करणानुयोग परिचय
आ. कुन्दकुन्द और उनके टीकाकार
कालजयी बनारसीदास/रक्षाबन्धन और दीपावली
बालबोध भाग 1,2,3/जिन खोजा तिन पाईयां
तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग 1,2/आध्यात्मिक भजन संग्रह
छहढाला (सचित्र)/भ. ऋषभदेव/शीलवान सुदर्शन
प्रशिक्षण निर्देशिका/जैन विधि-विधान
क्रमबद्धपर्याय/दृष्टि का विषय/ये तो सोचा ही नहीं
बारसाणुवेक्खा/चौबीस तीर्थंकर पूजा
गागर में सागर/आप कुछ भी कहो
पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव
जैनधर्म की कहानियाँ भाग 1 से 15 तक
अहिंसा के पथ पर/जिनवरस्य नयचक्रम्
णमोकार महामंत्र/वीतराग-विज्ञान प्रवचन भाग-5
चौसठ ऋद्धि विधान/कारणशुद्धपर्याय
दशलक्षण विधान/आचार्य कुन्दकुन्ददेव
पंचपरमेष्ठी विधान/विचार के पत्र विकार के नाम
आचार्य कुन्दकुन्द और उनके पंच परमागम
परीक्षामुख/मुक्ति का मार्ग/पश्चात्ताप
युगपुरुष कानजीस्वामी/सामान्य श्रावकाचार
अलिंगग्रहण प्रवचन/जिनधर्म प्रवेशिका
मैं कौन हूँ/सत्तास्वरूप/वीर हिमाचलतैं निकसी
समयसार : मनीषियों की दृष्टि में
व्रती श्रावक की ग्यारह प्रतिमाएँ/पदार्थ-विज्ञान
मैं ज्ञानानन्दस्वभावी हूँ/महावीर वंदना (कैलेण्डर)
वस्तुस्वातंत्र्य/भरत-बाहुबली नाटक
शास्त्रों के अर्थ समझने की पद्धति
सुख कहाँ है/सिद्धस्वभावी ध्रुव की ऊर्ध्वता
मैं स्वयं भगवान हूँ/णमोकार एक अनुशीलन
रीति-नीति/गोली का जवाब गाली से भी नहीं
समयसार कलश पद्यानुवाद/अष्टपाहुड़
योगसार पद्यानुवाद/कुन्दकुन्दशतक पद्यानुवाद
अर्चना/शुद्धात्मशतक पद्यानुवाद
षट्कारक अनुशीलन/अपनत्व का विषय

दर्शन चारित्र ज्ञानत्रय का सेवन करते मुनिवर।
सब एक आत्मा जानो निश्चय नय से शिवसुखकर।।

ॐ

श्री नवलब्धि विधान

मंगलाचरण

छंद – अनुष्टुप

मंगलं सिद्धपरमेष्ठी मंगलं तीर्थंकरम्।
मंगलं शुद्धचैतन्यं आत्मधर्मोऽस्तु मंगलम्।।

चामर

वीतराग श्री जिनेन्द्र ज्ञानरूप मंगलम्।
गणधरादि सर्व साधु ध्यान रूप मंगलम्।।
आत्मधर्म वस्तुधर्म सार्वधर्म-मंगलम्।
विश्व का स्वभाव ही अनाद्यनंत मंगलम्।।

दोहा

जयति पंच परमेष्ठी, जिन-प्रतिमा जिन-धाम।
जय जगदम्बे दिव्यध्वनि, श्री जिन-धर्म प्रणाम।।
मंगलमय नवलब्धियाँ, मंगलमय अरहंत।
सर्व अमंगल हरो प्रभु, जय जय जय भगवंत।।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

पीठिका

दोहा

श्री नवलब्धि विधान अब, करता हूँ आरंभ।
अष्टमदों के रहित हो, त्यागूँ सारे दंभ।।
पंच लब्धियाँ प्राप्त कर, पा पाँचों समवाय।
सम्यग्दर्शन श्रेष्ठ ही, ग्रहण करूँ सुखदाय।।

ज्यों धन अर्थी नृप जाने फिर उसकी सेवा करता।
धन पाने को राजा का अनुसरण प्रेम से करता।।

पाँचों ही मिथ्यात्व तज करूँ तत्त्व श्रद्धान।
शुद्धातम का ज्ञान कर लूँ चारित्र महान।।
दर्शन ज्ञान चारित्रमय यह रत्नत्रय यान।
सर्वऋद्धि दातार है यह नवलब्धि विधान।।
सभी लब्धियाँ श्रेष्ठ हैं सर्वसौख्य सम्पन्न।
सभी चमत्कृत चिन्मयी सब ही आत्मोत्पन्न।
प्रथम लब्धि बहुगुणमयी क्षायिक दान महान।
द्वितिय लब्धि बहुसुखमयी क्षायिक लाभ प्रधान।।
तृतीय लब्धि निज भोग है महिमामयी महान।
चौथी निज उपभोग है गरिमामयी प्रधान।।
पंचम क्षायिक वीर्य है बल अनंत की खान।
षष्टम क्षायिक शुद्ध है समकित श्रद्धावान।।
सप्तम दर्शनलब्धि है दर्शन गुण का स्रोत।
अष्टम केवलज्ञान है निज रस ओत-प्रोत।।
नवम लब्धि चारित्र है सर्वोत्कृष्ट प्रसिद्ध।
इसको पाकर जीव सब हो जाते हैं सिद्ध।।
ऋद्धि सिद्धियाँ पूर्व में मिल जातीं अनमोल।
जिनवाणी में लिखे हैं दिव्यध्वनि के बोल।।
जिनवाणी की बात सुन करो आत्म-कल्याण।
पाओगे निज शीश पर निर्मल मोक्ष वितान।।
धारक हैं नवलब्धि के श्री अरहंत महान।
शुद्ध द्रव्य प्रासुक सजा कीजे आप विधान।।
मंगलमय जीवन बने सफल बने सब काज।
सम्यग्दर्शन प्राप्त कर पाएँ निज पदराज।।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

त्यों मोक्ष प्राप्ति का इच्छुक निज जीवराज को जाने।
उसकी ही श्रद्धा करके अनुसरण उसी का ठाने।।

ॐ

श्री नवलब्धि विधान

समुच्चय पूजन

छंद – कुण्डलिया

रवि कैवल्य स्व प्राप्ति हित पाऊँ सम्यग्ज्ञान।
नवलब्धियाँ महान पा हो जाऊँ भगवान।।
हो जाऊँ भगवान ध्यान आत्मा का ध्याकर।
दान, लाभ, भोगोपभोग वीर्यादिक पाकर।।
क्षायिक समकित दर्शन ज्ञान चरित्र मिले छवि।
स्वगुण अनंत प्राप्त कर पाऊँ निज केवल रवि।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकनवलब्धिधारकजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्री क्षायिकनवलब्धिधारकजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री क्षायिकनवलब्धिधारकजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

अष्टक

छंद – ताटंक

सम्यग्ज्ञान स्वजल पाऊँ प्रभु जन्म जरादिक रोग हरूँ।
अजर अमर अविनाशी पद हित केवलज्ञान प्रकाश करूँ।।
नव केवललब्धियाँ प्राप्ति हित घाति चार विनशाऊँ नाथ।
पद सर्वज्ञ प्रगट कर प्रभु अरहंत दशा पा बनूँ स्वनाथ।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकनवलब्धिधारकजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि.।

नो कर्म कर्म मैं ही हूँ मुझमें नो कर्म कर्म है।
जबतक यह बुद्धि तभी तक यह प्राणी अप्रतिबुद्ध है।।

सम्यग्ज्ञान सुतरु चंदन पा भवाताप ज्वर करूँ विनाश।
भवदुख हारी शिव सुखकारी पाऊँ निर्मल आत्म-प्रकाश।।
नव केवललब्धियाँ प्राप्ति हित घाति चार विनशाऊँ नाथ।
पद सर्वज्ञ प्रगट कर प्रभु अरहंत दशा पा बनूँ स्वनाथ।।
ॐ ह्रीं श्री क्षायिकनवलब्धिधारकजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं नि.।

सम्यग्ज्ञान सुअक्षत पाकर शाश्वत अक्षय पद पाऊँ।
राग विनाशूँ भव समुद्र तर सिद्ध स्वपद प्रभु प्रगटाऊँ।।
नव केवल लब्धियाँ प्राप्ति हित घाति चार विनशाऊँ नाथ।
पद सर्वज्ञ प्रगट कर प्रभु अरहंत दशा पा बनूँ स्वनाथ।।
ॐ ह्रीं श्री क्षायिकनवलब्धिधारक जिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि.।

सम्यग्ज्ञान पुष्प लाऊँ प्रभु शील स्वभाव पूर्ण पाऊँ।
कामबाण विध्वंस करूँ प्रभु महाशीलपति हो जाऊँ।।
नव केवल लब्धियाँ प्राप्ति हित घाति चार विनशाऊँ नाथ।
पद सर्वज्ञ प्रगट कर प्रभु अरहंत दशा पा बनूँ स्वनाथ।।
ॐ ह्रीं श्री क्षायिकनवलब्धिधारकजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि.।

सम्यग्ज्ञान सुचरु लाऊँ प्रभु स्वगुण अनंत शीघ्र पाऊँ।
क्षुधा वेदनी नाश करूँ मैं परम तृप्त प्रभु हो जाऊँ।।
नव केवल लब्धियाँ प्राप्ति हित घाति चार विनशाऊँ नाथ।
पद सर्वज्ञ प्रगट कर प्रभु अरहंत दशा पा बनूँ स्वनाथ।।
ॐ ह्रीं श्री क्षायिकनवलब्धिधारकजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि.।

सम्यग्ज्ञान दीप उजियारूँ केवलज्ञान शीघ्र पाऊँ।
मोह कर्म सम्पूर्ण नाश कर परम शुद्ध पद प्रगटाऊँ।।
नव केवल लब्धियाँ प्राप्ति हित घाति चार विनशाऊँ नाथ।
पद सर्वज्ञ प्रगट कर प्रभु अरहंत दशा पा बनूँ स्वनाथ।।
ॐ ह्रीं श्री क्षायिकनवलब्धिधारकजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि.।

परद्रव्य सचित अचित्त को अबतक समझा यह मैं हूँ।
ये मेरे हैं मैं इनका विपरीत मान्यता मय हूँ।।

सम्यग्ज्ञानमयी स्वधूप ला शुक्ल ध्यान ही मैं ध्याऊँ।
अष्टकर्म परिपूर्ण नष्ट कर नित्य निरंजन पद पाऊँ।।
नव केवल लब्धियाँ प्राप्ति हित घाति चार विनशाऊँ नाथ।
पद सर्वज्ञ प्रगट कर प्रभु अरहंत दशा पा बनूँ स्वनाथ।।
ॐ ह्रीं श्री क्षायिकनवलब्धिधारकजिनेन्द्राय अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं नि.।

सम्यग्ज्ञान सुतरु फल लाऊँ महा मोक्ष फल प्रगटाऊँ।
अशरीरी अविनाशी पद पा शाश्वत परम सौख्य पाऊँ।।
नव केवल लब्धियाँ प्राप्ति हित घाति चार विनशाऊँ नाथ।
पद सर्वज्ञ प्रगट कर प्रभु अरहंत दशा पा बनूँ स्वनाथ।।
ॐ ह्रीं श्री क्षायिकनवलब्धिधारकजिनेन्द्राय महामोक्षफलप्राप्तये फलं नि.।

सम्यग्ज्ञान अर्घ्य मैं लाऊँ पद अनर्घ्य निज प्रगटाऊँ।
अजर अमर अविकारी अविकल सिद्ध स्वपद हे प्रभु पाऊँ।।
नव केवल लब्धियाँ प्राप्ति हित घाति चार विनशाऊँ नाथ।
पद सर्वज्ञ प्रगट कर प्रभु अरहंत दशा पा बनूँ स्वनाथ।।
ॐ ह्रीं श्री क्षायिकनवलब्धिधारक जिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं नि.।

महार्घ्य

वीरछंद

सदाचार की पृष्ठ भूमि पर ही होता जिनश्रुत स्वाध्याय।
सदाचार बिन स्वाध्याय का फल न कभी होता सुखदाय।।
स्वाध्याय का क्रम है रुचिपूर्वक तत्त्वाभ्यास करना।
स्वाध्याय का फल तत्त्वों का सम्यक् निर्णय उर धरना।।
तत्त्वों का निर्णय हो तो प्रभु होता भेद-ज्ञान विज्ञान।
भेद-ज्ञान होता तो होता सम्यग्दर्शन महामहान।।
सम्यग्दर्शन हो जाते ही हो जाता है ज्ञान चरित्र।
यही स्वरूपाचरण कहाता जो है पावन परम पवित्र।।

मेरे थे यही पूर्व में मैं रहा पूर्व में इनका।
होंगे भविष्य में मेरे भावी मैं भी हूँ इनका।।

फिर यह व्रत धारण करता है अवरिति को भी करता क्षय।
क्रम-क्रम ग्यारह प्रतिमा धारी होता निरतिचार गुणमय।।
क्षुल्लक होकर ऐलक बनता करता मुनि पद का अभ्यास।
फिर ये पंचमहाव्रत धरकर मुनि बन करता वन में वास।।
यह प्रमत्त-अप्रमत्त के झूले में झूला करता है।
फिर श्रेणी चढ़ता है क्रम-क्रम वसु कर्मों को हरता है।।
इस ही क्रम से चलकर प्रभु मैं क्रम उल्लंघन करूँ नहीं।
आस्रव को संवर से जीतूँ नूतन बंधन करूँ नहीं।।

दोहा

महा-अर्घ्य अर्पण करूँ, हे जिनेन्द्र भगवान।
क्षायिक लब्धि स्वप्राप्त कर, करूँ आत्मकल्याण।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकनवलब्धिधारकजिनेन्द्राय महार्घ्यं नि.।

जयमाला

छंद – मानव

आगम से ज्ञान प्राप्तकर जो ज्ञानशील होते हैं।
वे धैर्यपूर्वक शिवतरु के शुद्ध बीज बोते हैं।।
वे पहले भूमि शुद्धि हित मिथ्यात्व नष्ट करते हैं।
रागादि मोहभाव को बन द्रव्यदृष्टि हरते हैं।।
फिर भेद-ज्ञान के बल से बनते हैं स्वपर विवेकी।
सम्यग्दर्शन पाने पर होते न कभी अविवेकी।।
उर सम्यग्ज्ञान प्राप्त कर चारित्र शुद्ध पाते हैं।
संयम के पावन रथ को दृढ़तापूर्वक लाते हैं।।
आरूढ़ उसी पर होते ही शिवपथ पर चलते हैं।
मुनि अप्रमत्त बनते ही फल यथाख्यात फलते हैं।।
करते हैं मोह क्षीण वे घातिया चार हर लेते।
सर्वज्ञ स्वपद प्रगटाकर अरहंत दशा वर लेते।।

ऐसे अयथार्य विकल्प, यह मूढ़ जीव करता है।
भूतार्थ जानने वाला तो नहिं विकल्प करता है।।

फिर योगों को भी तजते क्षयकर अघातिया तत्क्षण।
ध्रुव सिद्ध स्वपद पाते निज हरते कर्मों के बंधन।।
फिर सादि अनंत काल तक वे निजानंदरस पीते।
जीवत्वशक्ति के बल से तो वे सदैव ही जीते।।
अक्षय अनंत शिवसुख के वे ही स्वामी होते हैं।
पाँचों प्रत्यय सब क्षयकर अन्तर्यामी होते हैं।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकनवलब्धिधारकजिनेन्द्राय जयमालापूर्णार्घ्यं नि.।

आशीर्वाद

दोहा

नव केवल की लब्धिया, क्षायिक श्रेष्ठ महान।
इन सब को पाऊँ प्रभो, पाकर केवलज्ञान।।

इत्याशीर्वादः

卐

अज्ञानी मोही प्राणी बहु जल्प युक्त रहता है।
ये बद्ध-अबद्ध पुद्गल सब मेरे हैं यह कहता है।।

ॐ

श्री क्षायिक दानलब्धि पूजन

स्थापना

वीरछंद

अंतराय क्षय हो जाने पर ही दानलब्धि होती है प्राप्त।
अभयदान जीवों को मिलता सबके उर सुख होता व्याप्त।।
शुक्लध्यान का प्रथम चरण ही अंतराय का करता नाश।
घाति चार का सर्वनाश कर देता केवलज्ञान प्रकाश।।

दोहा

दानलब्धि पूजन करूँ, करूँ स्व-पर कल्याण।
महिमामयी स्वज्ञान पा करूँ भेद-विज्ञान।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकदानलब्धिधारकजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्री क्षायिकदानलब्धिधारकजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री क्षायिकदानलब्धिधारकजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

अष्टक

छंद – राधिका

जल लाऊँ सहज भाव का क्षायिक पावन।
जन्मादि रोग त्रय नाश करूँ मनभावन।।
निज दानलब्धि हित अंतराय को नाशूँ।
प्रभु लोकालोक प्रकाशक ज्ञान प्रकाशूँ।।

ॐ ह्रीं श्री दानलब्धि धारकजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि.।

चंदन लाऊँ निज शुद्ध भाव का शीतल।
भव-ज्वर सम्पूर्ण मिटाऊँ होऊँ उज्ज्वल।।

सर्वज्ञ ज्ञान में आया उपयोग जीव लक्षण है।
वह पुद्गल अपना कैसे जिस में ना यह लक्षण है।।

निज दानलब्धि हित अंतराय को नाशूँ।
प्रभु लोकालोक प्रकाशक ज्ञान प्रकाशूँ।।
ॐ ह्रीं श्री क्षायिकदानलब्धिधारकजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं नि.।

अक्षत लाऊँ अखंड गुणधारी उज्ज्वल।
अक्षयपद पाऊँ हे प्रभु बनूँ समुज्ज्वल।।
निज दानलब्धि हित अंतराय को नाशूँ।
प्रभु लोकालोक प्रकाशक ज्ञान प्रकाशूँ।।
ॐ ह्रीं श्री क्षायिकदानलब्धिधारकजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि.।

निज पुष्प काम विध्वंसक हे प्रभु लाऊँ।
गुण शील प्रगट कर कामबाण विनशाऊँ।।
निज दानलब्धि हित अंतराय को नाशूँ।
प्रभु लोकालोक प्रकाशक ज्ञान प्रकाशूँ।।
ॐ ह्रीं श्री क्षायिकदानलब्धिधारकजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि.।

निज स्वचरु चढ़ाऊँ शुद्धभाव के रसमय।
परिपूर्ण सौख्य पाऊँ कर क्षुधारोग क्षय।।
निज दानलब्धि हित अंतराय को नाशूँ।
प्रभु लोकालोक प्रकाशक ज्ञान प्रकाशूँ।।
ॐ ह्रीं श्री क्षायिकदानलब्धिधारकजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि.।

निज दीप ज्ञानमय शुद्ध भाव के लाऊँ।
कैवल्य ज्ञान पा क्षायिक नवनिधि पाऊँ।।
निज दानलब्धि हित अंतराय को नाशूँ।
प्रभु लोकालोक प्रकाशक ज्ञान प्रकाशूँ।।
ॐ ह्रीं श्री क्षायिकदानलब्धि धारकजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि.।

निज धूप ध्यानमय दशधर्मों की लाऊँ।
वसु कर्म नाश पद नित्य निरंजन पाऊँ।।

यदि जीव बने पुद्गल तो वह अजीवत्व को पाए।
तब ही तू मूढ़ भाव से यह पुद्गल मेरा गाए।।

निज दानलब्धि हित अंतराय को नाशूँ।
प्रभु लोकालोक प्रकाशक ज्ञान प्रकाशूँ।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकदानलब्धिधारकजिनेन्द्राय अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं नि.।

निज शुद्धभाव के फल अनुपम प्रभु पाऊँ।
पा महामोक्ष फल मुक्तिपुरी को जाऊँ।।
निज दानलब्धि हित अंतराय को नाशूँ।
प्रभु लोकालोक प्रकाशक ज्ञान प्रकाशूँ।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकदानलब्धिधारकजिनेन्द्राय महामोक्षफलप्राप्तये फलं नि.।

निज शुद्धभाव के अर्घ्य बनाऊँ गुणमय।
पदवी अनर्घ्य ध्रुव पाऊँ शाश्वत निजमय।।
निज दानलब्धि हित अंतराय को नाशूँ।
प्रभु लोकालोक प्रकाशक ज्ञान प्रकाशूँ।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकदानलब्धिधारकजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं नि.।

अर्घ्यावली

छंद – चौपाई

सप्त-व्यसन मिथ्यात्व तजूँ मैं। सप्त-भयों से रहित बनूँ मैं।।
जिन उपदेश सुनूँ मैं शिवकर। दानलब्धि पाऊँ हे जिनवर।।

ॐ ह्रीं श्री मिथ्यात्वादिकसप्तव्यसन सप्तभयनिराकरण-उपदेशक जिनेन्द्रदानलब्धिधारकाय अर्घ्यं नि.।

स्वभावोन्मुख धर्म प्राप्त कर। निज अनुभव रस हृदय प्राप्त कर।।
जिन उपदेश सुनूँ मैं शिवकर। दानलब्धि पाऊँ हे जिनवर।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मसम्मुखीकरण-उपदेशक जिनेन्द्रदानलब्धिधारकाय अर्घ्यं नि.।

पाँचों अणुव्रत पालूँ स्वामी। क्रम-क्रम प्रतिमा धारूँ नामी।।
जिन उपदेश सुनूँ मैं शिवकर। दानलब्धि पाऊँ हे जिनवर।।

ॐ ह्रीं श्री अणुव्रत-उपदेशक जिनेन्द्रदानलब्धिधारकाय अर्घ्यं नि.।

जो जीव देह ना हो तो आचार्यों तीर्थंकर की।
संस्तुति सब मिथ्या जानो आत्मा है मानो तन ही।।

निश्चय पंचमहाव्रत लाऊँ। अट्ठाईस मूल गुण पाऊँ।।
जिन उपदेश सुनूँ मैं शिवकर। दानलब्धि पाऊँ हे जिनवर।।
ॐ ह्रीं श्री यथाख्यातचारित्र-उपदेशक जिनेन्द्रदानलब्धिधारकाय अर्घ्यं नि.।

जिन मुनि स्थविरकल्प हो जाऊँ। शुद्ध आत्मा प्रतिपल ध्याऊँ।।
जिन उपदेश सुनूँ मैं शिवकर। दानलब्धि पाऊँ हे जिनवर।।
ॐ ह्रीं श्री स्थविरकल्पमुनि-धर्मोपदेशक जिनेन्द्रदानलब्धिधारकाय अर्घ्यं नि.।

शुक्लध्यान का शौर्य हृदय हो। यथाख्यात चारित्र निलय हो।
जिन उपदेश सुनूँ मैं शिवकर। दानलब्धि पाऊँ हे जिनवर।।
ॐ ह्रीं श्री यथाख्यातचारित्र-उपदेशक जिनेन्द्रदानलब्धिधारकाय अर्घ्यं नि.।

जिन मुनि स्थविरकल्प हो जाऊँ। शुद्ध आत्मा प्रतिपल ध्याऊँ।
जिन उपदेश सुनूँ मैं शिवकर। दानलब्धि पाऊँ हे जिनवर।।
ॐ ह्रीं श्री स्थविरकल्पमुनि-धर्मोपदेशक जिनेन्द्रदानलब्धिधारकाय अर्घ्यं नि.।

जिनकल्पी मुनि बनकर स्वामी। निज स्वरूप ही ध्याऊँ नामी।
जिन उपदेश सुनूँ मैं शिवकर। दानलब्धि पाऊँ हे जिनवर।।
ॐ ह्रीं श्री जिनकल्पमुनि-धर्मोपदेशक जिनेन्द्रदानलब्धिधारकाय अर्घ्यं नि.।

शुद्धात्मा का ध्यान करूँ मैं। निज स्वभाव का ज्ञान करूँ मैं।
जिन उपदेश सुनूँ मैं शिवकर। दानलब्धि पाऊँ हे जिनवर।।
ॐ ह्रीं श्री शुद्धात्म-धर्मोपदेशक जिनेन्द्रदानलब्धिधारकाय अर्घ्यं नि.।

शुक्ल ध्यान अविकल्प करूँ मैं। केवलज्ञान महान वरूँ मैं।
शुद्ध बनूँ निज पदवी पाऊँ। सादि-अनंत सिद्ध हो जाऊँ।।
शुद्धातम का ध्यान करूँ मैं। शाश्वत पद निर्वाण वरूँ मैं।
जिन उपदेश सुनूँ मैं शिवकर। दानलब्धि पाऊँ हे जिनवर।।
ॐ ह्रीं श्री जिनकल्पमुनि-धर्मोपदेशक जिनेन्द्रदानलब्धिधारकाय अर्घ्यं नि.।

तन जीव एक हैं दोनों व्यवहार वचन यह जानो।
निश्चय से जीव देह को तुम एक पदार्थ न मानो।।

महार्घ्य

वीरछंद

तीन लोक में एकमात्र है श्रेष्ठ आत्मा का ही ध्यान।
पर भावों से सदा पृथक् तू केवल अपने को पहचान।।
पूर्ण शाश्वत सत्य त्रिकाली शुद्ध बुद्ध अविरुद्ध स्वरूप।
दर्शन ज्ञानमयी त्रिभुवनपति तू ही सिद्धशिला का भूप।।
निज स्वरूप का निर्णय करके शुद्ध आत्मा को ही जान।
तीन लोक में एकमात्र है श्रेष्ठ आत्मा का ही ध्यान।।

जितने सिद्ध हुए हैं अबतक इसी मार्ग से युक्त हुए।
छोड़ विकारी भावों को सब गुण अनंत संयुक्त हुए।।
तीर्थंकर भी निजस्वभाव भज भव झंझट से मुक्त हुए।
ज्ञान ध्यान तप संयम निजमय से ही कर्म विमुक्त हुए।।
तू भी अपना ध्यान लगा ले पालेगा निज पद निर्वाण।
तीन लोक में एकमात्र है श्रेष्ठ आत्मा का ही ध्यान।।

यह अपूर्व अवसर यदि चूका तो अनंत दुख पाएगा।
नर पर्याय महादुर्लभ फिर नहीं लौट तू आएगा।।
उत्तरोत्तर जिनकुल जिनश्रुत पार करे क्या पाएगा।
श्रुत जल में अवगाहन के बिन भव-भव भ्रमता जाएगा।।
इसीलिए तू अभी प्राप्त कर भेद-ज्ञान विज्ञान महान।
तीन लोक में एकमात्र है श्रेष्ठ आत्मा का ही ध्यान।।

ॐ ह्रीं श्री दानलब्धिधारकजिनेन्द्राय महार्घ्यं नि.।

जयमाला

छंद – मानव

निज में अपूर्व वैभव है निज में अपूर्व क्षमता है।
निज तत्त्व पूर्ण सुखसागर निज भावों में समता है।।

जीवों से भिन्न पुद्गल तन की संस्तुति करते मुनिगण।
केवलि की वन्दन संस्तुति हमने की कहते मुनिगण।।

निज ज्ञान परम हितकारी निज दर्शन भव भ्रम हारी।
निज का चारित्र सुलभ है जो निज में ही रमता है।।

निज रूप अनूप मनोहर है अलख अरूप अगोचर।
परिपूर्ण स्वभाव सरोवर जो निज में परिणमता है।।
शुभ-अशुभ विभाव निवारक है शुद्ध भाव का धारक।
है अद्वितीय आनंदघन त्रिभुवन में अनुपमता है।।

उसको ही मोक्ष मिलेगा उसका ही मोह गलेगा।
पर से विरक्त हो जो भी निज आतम में जमता है।।
जिसने कषाय को छोड़ा पर भावों से मुख मोड़ा।
पर द्रव्यों की दुखदायक, जिसको न तनिक ममता है।।

है सिद्ध लोक का वासी चैतन्य पुंज अविनाशी।
उज्ज्वल प्रकाश निज पाता जो अपने में थमता है।।
निज विनय पूर्ण अंतर में अति निर्मल बाह्यान्तर है।
अपने स्वभाव के प्रति जो प्रति समय सहज नमता है।।

ॐ ह्रीं श्री दानलब्धिधारकजिनेन्द्राय जयमालापूर्णार्घ्यं नि.।

आशीर्वाद

सोरठा

दानलब्धि की श्रेष्ठ, स्वनिधि प्राप्त हो हे प्रभु।
केवलज्ञान महान, पा हो जाऊँ सिद्ध मैं।।

इत्याशीर्वादः

निश्चय से योग्य नहीं है तन गुण न केवली के हैं।
केवली नाथ की संस्तुति वंदन ही केवली के हैं।।

ॐ

श्री क्षायिक लाभलब्धि पूजन

स्थापना

वीरछंद

क्षायिक लाभलब्धि प्रभु पाऊँ केवल रवि का करूँ प्रकाश।
मैं लाभांतराय को नाशूँ घातिकर्म का करूँ विनाश।।
इसीलिए पूजन करता हूँ लब्धि प्राप्त श्री जिनवर की।
सुख अनंत पाऊँ हे स्वामी द्युति नाशूँ भवसागर की।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकलाभलब्धिप्राप्तजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्री क्षायिकलाभलब्धिप्राप्तजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री क्षायिकलाभलब्धिप्राप्तजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

अष्टक

छंद – गीतिका

निज स्वभावी स्वजल लाऊँ अन्तराय विनाश हित।
जन्म-मृत्यु-जरा विनाशूँ प्राप्त कर लूँ सुख अमित।।
लब्धि क्षायिकलाभ के हित के अन्तराय विनाश दूँ।
सूर्य केवल प्राप्त करके ज्ञान का आलोक लूँ।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकलाभलब्धिधारकजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि.।

निज स्वभावी स्वचंदन ला हृदय को शीतल करूँ।
ताप भव का नाश करके हे प्रभो भवज्वर हरूँ।।
लब्धि क्षायिकलाभ के हित के अन्तराय विनाश दूँ।
सूर्य केवल प्राप्त करके ज्ञान का आलोक लूँ।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकलाभलब्धिधारकजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं नि.।

नगरी का वर्णन हो तो नृप का ना वर्णन होता।
त्यों देह संस्तवन हो तो केवलि संस्तवन न होता।।

निज स्वभावी शालि पाकर हृदय को निर्भय करूँ।
प्रगट अक्षयपद करूँ मैं भवोदधि पीड़ा हरूँ।।
लब्धि क्षायिकलाभ के हित के अन्तराय विनाश दूँ।
सूर्य केवल प्राप्त करके ज्ञान का आलोक लूँ।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकलाभलब्धिधारकजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतं नि.।

निज स्वभावी सुचरु लाऊँ ध्यान अपना ही करूँ।
क्षुधा की पीड़ा विनाशूँ तृप्त पद सादर वरूँ।।
लब्धि क्षायिकलाभ के हित के अन्तराय विनाश दूँ।
सूर्य केवल प्राप्त करके ज्ञान का आलोक लूँ।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकलाभलब्धिधारकजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि.।

निज स्वभावी दीप लाऊँ मोह भ्रम तम क्षय करूँ।
ज्ञान केवल प्राप्त करके सदा उर आनंद धरूँ।।
लब्धि क्षायिकलाभ के हित को अन्तराय विनाश दूँ।
सूर्य केवल प्राप्त करके ज्ञान का आलोक लूँ।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकलाभलब्धिधारकजिनेन्द्राय विनाशनाय नैवेद्यं नि.।

निज स्वभावी धूप लाऊँ शुक्लध्यानी बनूँ प्रभु।
अष्टकर्म विनष्ट कर के पूर्णज्ञानी बनूँ विभु।।
लब्धि क्षायिकलाभ के हित के अन्तराय विनाश दूँ।
सूर्य केवल प्राप्त करके ज्ञान का आलोक लूँ।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकलाभलब्धिधारकजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि.।

निज स्वभावी फल अनूठे प्राप्त कर शिवसुख वरूँ।
मोक्षफल को प्राप्त करके शाश्वत सुख उर भरूँ।।
लब्धि क्षायिकलाभ के हित के अन्तराय विनाश दूँ।
सूर्य केवल प्राप्त करके ज्ञान का आलोक लूँ।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकलाभलब्धिधारकजिनेन्द्राय मोक्षफलप्राप्तये फलं नि.।

जितमोही ज्ञान स्वभावी जो अधिक आत्मा जाने।
ज्ञायक परमार्थ पुरुष जो जितमोही उन्हें पिछाने।।

निज स्वभावी अर्घ्य अनुपम गुणमयी पाऊँ प्रभो।
पद अनर्घ्य महान पाऊँ कर्म वसु नाशूँ विभो।।
लब्धि क्षायिकलाभ के हित के अन्तराय विनाश दूँ।
सूर्य केवल प्राप्त करके ज्ञान का आलोक लूँ।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकलाभलब्धिधारकजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं नि.।

अर्घ्यावली

छंद – ताटंक

अनंतानुबंधी कषाय हर मिथ्यातम का करूँ विनाश।
उपशम क्षयोपशम क्षायिक पा पाऊँ केवलज्ञान प्रकाश।।
लाभलब्धि का महत्त्व जानूँ ज्ञान लाभ लूँ सर्वप्रकार।
गुण अनंत प्रगटाऊँ अपने शिवसुख पाऊँ अपरंपार।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकलब्धिप्राप्तजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

सप्त तत्त्व नव पदार्थ जानूँ छह द्रव्यों का करके ज्ञान।
पाँचों अस्तिकाय पहचानूँ लब्धि विशुद्धि मिले भगवान।।
लाभलब्धि का महत्त्व जानूँ ज्ञान लाभ लूँ सर्वप्रकार।
गुण अनंत प्रगटाऊँ अपने शिवसुख पाऊँ अपरंपार।।

ॐ ह्रीं श्री विशुद्धिलब्धिप्राप्तजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

जिनकुल जिनश्रुत पाऊँ स्वामी मिले देशनालब्धि विशाल।
मोहकर्म दो भेद नाश कर पाऊँ केवलज्ञान स्वकाल।।
लाभलब्धि का महत्त्व जानूँ ज्ञान लाभ लूँ सर्वप्रकार।
गुण अनंत प्रगटाऊँ अपने शिवसुख पाऊँ अपरंपार।।

ॐ ह्रीं श्री देशनालब्धिप्राप्तजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

कर्मबंध की प्रकृति प्रदेश स्थिति और अनुभाग विशेष।
अब प्रायोग्यलब्धि प्राप्त कर करूँ आत्म-कल्याण हमेश।।

जितमोह पुरुष का जानो जब मोह नाश हो जाता।
परमार्थ ज्ञानि कहते हैं वह क्षीण मोह कहलाता।।

लाभलब्धि का महत्त्व जानूँ ज्ञान लाभ लूँ सर्वप्रकार।
गुण अनंत प्रगटाऊँ अपने शिवसुख पाऊँ अपरंपार।।
ॐ ह्रीं श्री प्रायोग्यलब्धिप्राप्तजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

लाभ मिले प्रभु करणलब्धि का पाऊँ अपना शुद्ध स्वकाल।
ज्ञान भावना भाते-भाते पाऊँ केवल सूर्य विशाल।।
लाभलब्धि का महत्त्व जानूँ ज्ञान लाभ लूँ सर्वप्रकार।
गुण अनंत प्रगटाऊँ अपने शिवसुख पाऊँ अपरंपार।।
ॐ ह्रीं श्री करणलब्धिप्राप्तजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

भाव औदयिक नाश करूँ मैं अधःकरणलब्धि पाऊँ।
जिन-उपदेश प्राप्त कर प्रभुजी शुक्लध्यान ही मैं ध्याऊँ।।
लाभलब्धि का महत्त्व जानूँ ज्ञान लाभ लूँ सर्वप्रकार।
गुण अनंत प्रगटाऊँ अपने शिवसुख पाऊँ अपरंपार।।
ॐ ह्रीं श्री अधःकरणलब्धिप्राप्तजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

नर्क निगोद तिर्यंच कुगति अरु सुर-नर चारों गति भटका।
लब्धि अपूर्वकरण ना पायी परभावों में ही अटका।।
लाभलब्धि का महत्त्व जानूँ ज्ञान लाभ लूँ सर्वप्रकार।
गुण अनंत प्रगटाऊँ अपने शिवसुख पाऊँ अपरंपार।।
ॐ ह्रीं श्री अपूर्वकरणलब्धिप्राप्तजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

लंब्धि अनिवृत्तिकरण मैं पाऊँ यथाख्यात पाऊँ संपूर्ण।
पहले घातिकर्म विनशाऊँ फिर अघातिया कर दूँ चूर्ण।।
लाभलब्धि का महत्त्व जानूँ ज्ञान लाभ लूँ सर्वप्रकार।
गुण अनंत प्रगटाऊँ अपने शिवसुख पाऊँ अपरंपार।।
ॐ ह्रीं श्री अनिवृत्तिकरणलब्धिप्राप्तजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

लब्धि अधिकरण पूर्ण प्राप्त कर निश्चय परमातम ध्याऊँ।
सर्वोत्कृष्ट स्वपद मैं पाऊँ फिर न लौट भव में आऊँ।।

परभाव सदा पर जानो प्रत्याख्यान करो पापों का।
यह नियम सुजान ज्ञान ही प्रत्याख्यान है नहीं अन्य का।।

लाभलब्धि का महत्त्व जानूँ ज्ञान लाभ लूँ सर्वप्रकार।
गुण अनंत प्रगटाऊँ अपने शिवसुख पाऊँ अपरंपार।।
ॐ ह्रीं श्री अधिकरणलब्धिप्राप्तजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

महार्घ्य

वीरछंद

ज्ञान अतीन्द्रिय उपादेय है इन्द्रिय ज्ञान सर्वथा हेय।
एकमात्र ज्ञायक स्वभाव ही बंध-मोक्ष से रहित अमेय।।
इसमें पंच परावर्त्तनमय कण भर भी संसार नहीं।
स्थिति प्रकृति प्रदेश और अनुभाग बंध का भार नहीं।।
गुण अनंतमय ज्ञानशरीरी कोई भी आकार नहीं।
निर्विकल्प समरसी भावमय अणु भर कहीं विकार नहीं।।
पूर्णानंद स्वरूपी शाश्वत शुद्ध-आत्मा ही है श्रेय।
ज्ञान अतीन्द्रिय उपादेय है इन्द्रिय-ज्ञान सर्वथा हेय।।
ज्ञानगम्य इन्द्रिय अगम्य है आराधन करने के योग्य।
महा शान्त अनुभव रस सागर आस्वादन करने के योग्य।।
परम शुद्ध निज आत्मतत्त्व ही है दर्शन करने के योग्य।
सकल ज्ञेय का ज्ञाता-दृष्टा ही चिन्तन करने के योग्य।।
पूर्ण शुद्ध चैतन्य पिण्ड ही सिद्ध स्वरूपी निर्मल ध्येय।
ज्ञान अतीन्द्रिय उपादेय है इन्द्रिय-ज्ञान सर्वथा हेय।।
चिदानंद चिच्चमत्कार चिन्मय चिद्वरम चैतन्यानंद।
सहज सर्वदर्शी सर्वोत्तम सर्व सौख्यमय सहजानंद।।
अमल अनूप अतुल अविकारी अविनाशी आनंदानंद।
परम पूज्य परमेश्वर पावन परम ध्यानपति परमानंद।।
ध्यान ध्येय ध्याता तू ही ज्ञाता ज्ञान स्वयं ही ज्ञेय।
ज्ञान अतीन्द्रिय उपादेय है इन्द्रिय-ज्ञान सर्वथा हेय।।
ॐ ह्रीं श्री लाभलब्धिप्राप्तजिनेन्द्राय महार्घ्यं नि.।

पर द्रव्य जान पैर का ज्यों, जो पुरुष त्याग करता है।
उस भाँति पुरुष, ज्ञानी भी पर भाव त्याग करता है।।

जयमाला

छंद – सरसी

आस्रव अशुचि दुखों का सागर इसका नाश करो।
बंधभाव से दूर रहो उर ज्ञान प्रकाश करो।।
भटक रहे हो क्यों अनादि से तनिक विचारो तो।
तत्त्वज्ञान के द्वारा अपनी भूल सुधारो तो।।
मिथ्या भ्रम की छायाओं को शीघ्र निवारो तो।
सम्यग्दर्शन की महिमा को उर में धारो तो।।
संवर सहित कर्म निर्जरा कर भवपाश हरो।
आस्रव अशुचि दुखों का सागर इसका नाश करो।।
शुभ या अशुभ आस्रव दोनों से मुख मोड़ो तो।
पाप-पुण्य भावों से निज को अब मत जोड़ो तो।।
राग-द्वेष के परिणामों को यदि तुम तोड़ो तो।।
समता रस का प्याला पी शिवपथ पर दौड़ो तो।।
महामोक्ष पद पा जाओगे यह दृढ़ विश्वास करो।
आस्रव अशुचि दुखों का सागर इसका नाश करो।
आत्म-स्वभाव भिन्न परभावों से यह जानो तो।
पूर्ण अनादि-अनंत एक निज को पहिचानो तो।।
अब संकल्प-विकल्प जाल को क्षय कर मानो तो।
केवल रवि प्रगटाने का दृढ़ निश्चय ठानो तो।।
वीतराग अरहंत सिद्ध बन मुक्ताकाश वरो।
आस्रव अशुचि दुखों का सागर इसका नाश करो।।

ॐ ह्रीं श्री लाभलब्धिप्राप्तजिनेन्द्राय जयमालापूर्णार्घ्यं नि.।

आशीर्वाद

दोहा

लाभलब्धि को प्राप्त कर, पाऊँ सौख्य अमेय।
केवलज्ञानी हो प्रभो, सिद्ध बनूँ स्वयमेव।।

इत्याशीर्वादः

यह मोह नहीं है मेरा मैं तो उपयोग एक हूँ।
कहते स्वपर समय विज्ञाता वह निर्ममत्व मोहों से।।

ॐ

पूजन क्रमांक : ४

श्री क्षायिक भोगलब्धि पूजन

स्थापना

वीरछंद

क्षायिक भोगलब्धि प्रभु पाऊँ अंतराय का नाश करूँ।
घातिकर्म चारों ही हरकर केवलज्ञान प्रकाश करूँ।।
अंतरंग सुखरूप वृद्धि पाने का मेरा है उद्देश।
आप कृपा से मुक्ति प्राप्त हो यही विनय है हे परमेश।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकभोगलब्धिधारकजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्री क्षायिकभोगलब्धिधारकजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री क्षायिकभोगलब्धिधारकजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

अष्टक

छंद – सार (जोगीरासा)

निजदर्शन जल लाऊँ स्वामी परमोज्ज्वल सुखकारी।
जन्म-जरादिक रोग नशाऊँ पाऊँ पद शिवकारी।।
क्षायिक भोगलब्धि मैं पाऊँ अंतराय को जीतूँ।
भव के सकल विभाव दुखमयी से मैं हे प्रभु रीतूँ।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकभोगलब्धिधारकजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि.।

निजदर्शन चंदन अतिशीतल परमोज्ज्वल प्रभु लाऊँ।
भव-ज्वाला सम्पूर्ण बुझाऊँ ध्रुव शीतलता पाऊँ।।
क्षायिक भोगलब्धि मैं पाऊँ अंतराय को जीतूँ।
भव के सकल विभाव दुखमयी से मैं हे प्रभु रीतूँ।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकभोगलब्धिधारकजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं नि.।

निजदर्शन अक्षत प्रभु लाऊँ अक्षयपद प्रगटाऊँ।
भवसागर दुख के जो कारण उन सबको विघटाऊँ।।

धर्मादि द्रव्य ना मेरे उपयोग एक मैं ही हूँ।
कहें ज्ञाता स्वपर समय के हैं धर्म द्रव्य निर्मोही।।

क्षायिक भोगलब्धि मैं पाऊँ अंतराय को जीतूँ।
भव के सकल विभाव दुखमयी से मैं हे प्रभु रीतूँ।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकभोगलब्धिधारकजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि.।

निजदर्शन गुण पुष्प सजाऊँ महाशील गुण पाऊँ।
कामबाण की व्याधि मिटाऊँ शुद्ध स्वपद प्रगटाऊँ।।
क्षायिक भोगलब्धि मैं पाऊँ अंतराय को जीतूँ।
भव के सकल विभाव दुखमयी से मैं हे प्रभु रीतूँ।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकभोगलब्धिधारकजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि.।

निजदर्शन के सुचरु चढ़ाऊँ क्षुधाव्याधि विनशाऊँ।
परम तृप्त हो अपने पथ पर हे प्रभु बढ़ता जाऊँ।।
क्षायिक भोगलब्धि मैं पाऊँ अंतराय को जीतूँ।
भव के सकल विभाव दुखमयी से मैं हे प्रभु रीतूँ।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकभोगलब्धिधारकजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि.।

निजदर्शन के जगमग-जगमग दीप अनूठे लाऊँ।
मोह महामिथ्यात्व तिमिर हर केवलज्ञान जगाऊँ।।
क्षायिक भोगलब्धि मैं पाऊँ अंतराय को जीतूँ।
भव के सकल विभाव दुखमयी से मैं हे प्रभु रीतूँ।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकभोगलब्धिधारकजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि.।

निजदर्शन की धूप ध्यानमय परम अनूठी लाऊँ।
अष्टकर्म विध्वंस करूँ प्रभु पद निर्भार सजाऊँ।।
क्षायिक भोगलब्धि मैं पाऊँ अंतराय को जीतूँ।
भव के सकल विभाव दुखमयी से मैं हे प्रभु रीतूँ।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकभोगलब्धिधारकजिनेन्द्राय अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं नि.।

निजदर्शन फल मोक्ष सुफल ध्रुव इसको ही प्रगटाऊँ।
कर्म-बंध से रहित बनूँ मैं प्रभु पंचमगति पाऊँ।।
क्षायिक भोगलब्धि मैं पाऊँ अंतराय को जीतूँ।
भव के सकल विभाव दुखमयी से मैं हे प्रभु रीतूँ।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकभोगलब्धिधारकजिनेन्द्राय महामोक्षफलप्राप्तये फलं नि.।

मैं एक सदैव अरूपी हूँ शुद्ध ज्ञान दर्शन मय।
परमाणु मात्र भी पर का मेरा न कभी है निश्चय।।

निजदर्शन के अर्घ्य बनाऊँ पद अनर्घ्य प्रगटाऊँ।
आत्मोन्नति का मूल मंत्र ये नित्य जपूँ हर्षाऊँ।।
क्षायिक भोगलब्धि मैं पाऊँ भोग करूँ निज सुख का।
सादि अनंत काल न आए पर भर कण भी दुख का।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकभोगलब्धिधारकजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं नि. स्वाहा।

अर्घ्यावली

छंद – सार जोगीरासा

मोहकर्म की सात प्रकृतियाँ पहले उपशम कर लूँ।
उपशम समकित पाऊँ स्वागी निज गुण उर में भर लूँ।।
क्षायिक भोगलब्धि मैं पाऊँ भोग करूँ निजसुख का।
सादि-अनंत काल न आए पल भर कण भी दुख का।।१।।

ॐ ह्रीं श्री प्रथमभोगलब्धिधारकजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

अप्रत्याख्यानी कषाय हर देशव्रती बन जाऊँ।
अविरति प्रभु सम्पूर्ण विनाशूँ अणुव्रती हो जाऊँ।।
क्षायिक भोगलब्धि मैं पाऊँ भोग करूँ निजसुख का।
सादि-अनंत काल न आए पल भर कण भी दुख का।।२।।

ॐ ह्रीं श्री द्वितीयभोगलब्धिधारकजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

फिर प्रत्याख्यानी कषाय हर पंच महाव्रत धारूँ।
मुनि निर्ग्रंथ बनूँ मैं प्रभुजी सर्व पाप परिहारूँ।।
क्षायिक भोगलब्धि मैं पाऊँ भोग करूँ निजसुख का।
सादि-अनंत काल न आए पल भर कण भी दुख का।।३।।

ॐ ह्रीं श्री तृतीयभोगलब्धिधारकजिनेन्द्राय अर्घ्यं निर्वपामीति स्वाहा।

पंद्रह भेद प्रमाद नाश कर पूर्ण देशसंयम लूँ।
आत्म-ध्यान की गरिमा पाऊँ राग द्वेष सब हर लूँ।।

जो हैं अजान आत्मा से मोही व मूढ़ अज्ञानी।
अध्यवसानादि कर्म को जीव कहता कैसा ज्ञानी।।

क्षायिक भोगलब्धि मैं पाऊँ भोग करूँ निज सुख का।
सादि-अनंत काल न आए पल भर कण भी दुख का।।

ॐ ह्रीं श्री चतुर्थभोगलब्धिधारकजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

पूर्वभवों में निज परिणाम न मैंने सुधारे स्वामी।
शेष संज्वलन भी क्षय करने निज को ध्याऊँ स्वामी।।
क्षायिक भोगलब्धि मैं पाऊँ भोग करूँ निज सुख का।
सादि-अनंत काल न आए पल भर कण भी दुख का।।

ॐ ह्रीं श्री पंचमीभोगलब्धिधारकजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

अष्टम गुणस्थान श्रेणी चढ़ यथाख्यात उर लाऊँ।
ग्यारहवें से गिरूँ न प्रभुजी ऐसा ध्यान लगाऊँ।।
क्षायिक भोगलब्धि मैं पाऊँ भोग करूँ निज सुख का।
सादि-अनंत काल न आए पल भर कण भी दुख का।।

ॐ ह्रीं श्री षष्ठभोगलब्धिधारकजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

जबतक है संज्वलन तभीतक महामोक्ष अभिलाषा।
इसके क्षय होने पर मिलती पूर्ण ज्ञान की भाषा।।
क्षायिक भोगलब्धि मैं पाऊँ भोग करूँ निज सुख का।
सादि-अनंत काल न आए पल भर कण भी दुख का।।

ॐ ह्रीं श्री सप्तमीभोगलब्धिधारकजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

अट्ठाईस प्रकृतियाँ नाशूँ मोहकर्म की स्वामी।
केवलज्ञानी हो जाऊँ मैं उत्तम अन्तर्यामी।।
क्षायिक भोगलब्धि मैं पाऊँ भोग करूँ निज सुख का।
सादि-अनंत काल न आए पल भर कण भी दुख का।।

ॐ ह्रीं श्री अष्ठमभोगलब्धिधारकजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

सूक्ष्म-क्रिया-प्रतिपाति ध्यान व्युपरत-क्रिया-निवृत्ति।
ध्यान करूँ मैं निर्भारी बन तज दूँ सकल प्रवृत्ति।।

अध्यवसानों में तीव्रमंद अनुभाग जो आत्मा माने।
नो कर्म आदि को भी तो अज्ञानी जीव पिछाने।।

क्षायिक भोगलब्धि मैं पाऊँ भोग करूँ निज सुख का।
सादि-अनंत काल न आए पल भर कण भी दुख का।।
ॐ ह्रीं श्री नवमभोगलब्धिधारकजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

महार्घ्य

छंद – मत्तसवैया

सर्वोच्च लक्ष्य हो जीवन का केवल शुद्धात्म रूप दर्शन।
हो तत्त्वज्ञान का ही अभाव तो पूर्ण असंभव निज चिन्तन।।
पूर्णता प्राप्त करना हो तो मिथ्यात्व भाव का मूल हरो।
पर की माया फिर-फिर आए ऐसी न कभी भी भूल करो।।
तप संयम परम अहिंसा से निज को निज के अनुकूल करो।
सद्दर्शन ज्ञान चरित्र शक्ति से कर्मों को निर्मूल करो।।
शिवमार्ग प्रगट हो जाता है जब होता है सम्यग्दर्शन।
सर्वोच्च लक्ष्य हो जीवन का केवल शुद्धात्म रूप दर्शन।।

शुद्धात्म ज्योति से चेतन की चिद्रूप चंद्रिका खिल जाती।
निज परिणति मंगल वेला में चिन्मय प्रियतम से मिल जाती।।
पर परिणति की कालिमा कलुष ज्ञानात्मक जल से घुल जाती।
भावना शुद्ध मर्यादित हो निज अनुभव रस में घुल जाती।।
पूर्णत्व प्राप्त हो जाता है त्रिभुवन करता है पद अर्चन।
सर्वोच्च लक्ष्य हो जीवन का केवल शुद्धात्म रूप दर्शन।।

भव भँवर जाल से भरा हुआ हो रहा प्रतिसमय भावमरण।
यह जन्म-जरा दुख मरणमयी प्रतिपल अनगिनती व्यथावरण।।
निज की अनुभूति नहीं जबतक तबतक हैं सारे वृथाचरण।
शुद्धोपयोग बिन कैसे तू पाएगा अरे अपूर्वकरण।।
पर से अब दृष्टि फेर अपनी कर ले तू त्वरित राग वर्जन।
सर्वोच्च लक्ष्य हो जीवन का केवल शुद्धात्म रूप दर्शन।।
समकित की छाया मिलते ही हो जाता है शिवलोक निकट।
अज्ञान-आवरण हटते ही हो जाता केवलज्ञान प्रकट।।

तीव्र मंद गुणों के भेदों अनुभाग को जीव मानता।
अज्ञानी कर्म उदय को ही आत्मा अरे जानता।

सर्वोत्कृष्ट शाश्वत अनंत आनंद अतीन्द्रिय सिंधु स्वघट।
सर्वज्ञ सर्वदर्शी होते ही क्षय होता संसार विकट।।
परिपूर्ण लक्ष्य हो जाता है हो जाता चिदानन्द चिद्घन।
सर्वोच्च लक्ष्य हो जीवन का केवल शुद्धात्म रूप दर्शन।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकभोगलब्धिधारकजिनेन्द्राय महार्घ्यं नि.।

जयमाला

छंद – विधाता

विभावी भाव करके जो कर्म के बंध करता है।
उदय जब कर्म आते हैं तो उनको उर में धरता है।।
दुःखी होता है कर्मों से सुखी होता न कर्मों से।
नरक पशुगति में जाता है स्वर्ग में देह धरता है।।
एक दिन स्वर्ग से गिरता अधोगति में ये जाता है।
भाग्य से फिर मनुज भव पा कर्म खोटे ही करता है।।
परावर्त्तन ये करता है सदा पाँचों महादुःखमय।
नहीं घबराता है इनसे पुनः ये बंध करता है।।
अगर निज को निरख ले ये तनिक निज को परख ले ये।
तो सम्यग्ज्ञान पाते ही भवोदधि दुक्ख हरता है।।
अगर मिल जाए रत्नत्रय समिति सम्यक् सतत् पाले।
तो त्रिभुवन का तिलक बनकर मुक्तिसुख उर में भरता है।।
अगर निर्वाण सुख चाहो तो कर लो ध्यान सम्यक् अब।
जिनागम घोषणा पूर्वक यही जयघोष करता है।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकभोगलब्धिधारकजिनेन्द्राय जयमालापूर्णार्घ्यं नि.।

आशीर्वाद

दोहा

भोगलब्धि की शक्ति से, पाऊँ सौख्य अनंत।
निज का ही प्रभु भोग कर, हो जाऊँ भगवंत।।

इत्याशीर्वादः

卐

जो जी कर्म मिश्रित को ही अरे आत्मा माने।
कर्मों के संयोगों को वह मूढ़ आत्मा जाने।।

ॐ

श्री क्षायिक उपभोगलब्धि पूजन

स्थापना

छंद – ताटंक

प्रभु उपभोगलब्धि पाऊँ मैं अंतराय को क्षय करके।
निज सर्वज्ञ दशा प्रगटाऊँ त्रेसठ कर्म प्रकृति हर के।।
जिन दर्शन से निज दर्शन कर मुक्तिमार्ग पर आ जाऊँ।
जिन-पूजन कर सम्यक् फल प्रभु महामोक्ष पद प्रगटाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिक-उपयोगलब्धिधारकजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्री क्षायिक-उपयोगगलब्धिधारकजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री क्षायिक-उपयोगगलब्धिधारकजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

अष्टक

छंद – मत्तसवैया

अति निर्मल शीतल शान्त सिन्धु शुद्धात्म स्वजल लाऊँ स्वामी।
जन्मादि रोग त्रय नाश करूँ निज पद पाऊँ अन्तर्यामी।।
क्षायिकउपभोगलब्धि पाऊँ प्रभु अंतराय पर जय पाऊँ।
अन्तर्मुहूर्त में परम ज्ञान केवल की निधियाँ प्रगटाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिक-उपभोगलब्धिधारकजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि.।

समभावी शीतल चंदन ला मस्तक पर तिलक करूँ पावन।
संसार ताप क्षय करके प्रभु ध्रुवधाम सजाऊँ मनभावन।।
क्षायिक उपभोगलब्धि पाऊँ प्रभु अंतराय पर जय पाऊँ।
अन्तर्मुहूर्त में परम ज्ञान केवल की निधियाँ प्रगटाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिक-उपभोगलब्धिधारकजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं नि.।

दुर्बुद्धि जीव पर को ही आत्मा कहता है जानो।
सत्यार्थ वादि कहते हैं वह परमार्थी मत मानो।।

समभावी परम शुद्ध अक्षत हे प्रभु मैं चरण चढ़ाऊँगा।
उत्तम अक्षय पद पाने को मैं ध्यान स्वयं का ध्याऊँगा।।
क्षायिक उपभोगलब्धि पाऊँ प्रभु अंतराय पर जय पाऊँ।
अन्तर्मुहूर्त में परम ज्ञान केवल की निधियाँ प्रगटाऊँ।।
ॐ ह्रीं श्री क्षायिक-उपभोगलब्धि धारकजिनेन्द्राय अक्षयपद प्राप्तये अक्षतान् नि.।

समभावी पुष्प शीलमय ला मैं कामव्याधि विनशाऊँगा।
चौरासी लाख गुणों से प्रभु अब मैं सज्जित हो जाऊँगा।।
क्षायिक उपभोगलब्धि पाऊँ प्रभु अंतराय पर जय पाऊँ।
अन्तर्मुहूर्त में परम ज्ञान केवल की निधियाँ प्रगटाऊँ।।
ॐ ह्रीं श्री क्षायिक-उपभोगलब्धिधारकजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि.।

समभावी सुचरु धवल उज्ज्वल चरणों में आज चढ़ाऊँगा।
चिर क्षुधा-वेदना हरने को शुद्धात्म तत्त्व निज ध्याऊँगा।।
क्षायिक उपभोगलब्धि पाऊँ प्रभु अंतराय पर जय पाऊँ।
अन्तर्मुहूर्त में परम ज्ञान केवल की निधियाँ प्रगटाऊँ।।
ॐ ह्रीं श्री क्षायिक-उपभोगलब्धिधारकजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि.।

समभावी दीप सजा उर में दीपावली आज मनाऊँगा।
मोहान्धकार को क्षय करके अनुपम प्रकाश निज पाऊँगा।।
क्षायिक उपभोगलब्धि पाऊँ प्रभु अंतराय पर जय पाऊँ।
अन्तर्मुहूर्त में परम ज्ञान केवल की निधियाँ प्रगटाऊँ।।
ॐ ह्रीं श्री क्षायिक-उपभोगलब्धिधारकजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि.।

समभावी ध्यान धूप लाकर भवज्वाला पूर्ण बुझाऊँगा।
ज्ञानावरणादिक अष्टकर्म क्षय करके निज सुख पाऊँगा।।
क्षायिक उपभोगलब्धि पाऊँ प्रभु अंतराय पर जय पाऊँ।
अन्तर्मुहूर्त में परम ज्ञान केवल की निधियाँ प्रगटाऊँ।।
ॐ ह्रीं श्री क्षायिक-उपभोगलब्धिधारकजिनेन्द्राय अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं नि.।

पुद्गल परिणामों से जो उत्पन्न हुए हैं वे सब।
किस रीत जीव के वे हैं केवली भाषते हैं सब।।

समभावी फल लाऊँ अनुपम निज महामोक्ष फल प्रगटाऊँ।
भवसागर को मैं पार करूँ अपना अनंत वैभव पाऊँ।।
क्षायिक उपभोगलब्धि पाऊँ प्रभु अंतराय पर जय पाऊँ।
अन्तर्मुहूर्त में परम ज्ञान केवल की निधियाँ प्रगटाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिक-उपभोगलब्धिधारकजिनेन्द्राय महामोक्षफलप्राप्तये फलं नि.।

समभावी अर्घ्य गुणमयी ला पदवी अनर्घ्य पाऊँ स्वामी।
निष्कंटक निज पदराज मिले हो जाऊँ प्रभु अन्तर्यामी।।
क्षायिक उपभोगलब्धि पाऊँ प्रभु अंतराय पर जय पाऊँ।
अन्तर्मुहूर्त में परम ज्ञान केवल की निधियाँ प्रगटाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिक-उपभोगलब्धिधारकजिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं नि.।

अर्घ्यावली

छंद – सार (जोगीरासा)

पहले अशुभ ध्यान त्याग दूँ फिर शुभध्यान तजूँ मैं।
धर्मध्यान का आश्रय लेकर आत्मस्वरूप भजूँ मैं।।
लब्धि सहज उपभोग प्राप्त करने का उद्यम ठानूँ।
आत्मस्वरूप अचंचल निर्मल इसको ही मैं जानूँ।।

ॐ ह्रीं श्री अप्रशस्तध्यानवर्जितधर्मध्यानसहित-उपभोगलब्धिधारक जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

वीतराग बनने को स्वामी आज्ञा विचय सुहाए।
ध्यान अपाय विचय ध्याऊँ मैं निज में मन लग जाए।।
लब्धि सहज उपभोग प्राप्त करने का उद्यम ठानूँ।
आत्मस्वरूप अचंचल निर्मल इसको ही मैं जानूँ।।

ॐ ह्रीं श्री आज्ञाविचयअपायविचयधर्मध्यानसहित-उपभोगलब्धिधारक जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

वसुभाँति कर्म पुद्गल मय सर्वज्ञ देव कहते हैं।
उदयावलि में कर्मों का फल दुखमय ही कहते हैं।।

ध्यान विपाक विचय मैं कर लूँ फिर संस्थान विचय हो।
धर्मध्यान के चारों पाए जीतूँ पूर्ण विजय हो।।
लब्धि सहज उपभोग प्राप्त करने का उद्यम ठानूँ।
आत्मस्वरूप अचंचल निर्मल इसको ही मैं जानूँ।।

ॐ ह्रीं श्री विपाकविचयसंस्थानविचयधर्मध्यानसहित-उपभोगलब्धिधारक जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

क्षायिक श्रेणी चढ़कर पहला शुक्लध्यान ही ध्याऊँ।
पृथक्त्व वितर्क वीचार ध्यान कर क्षीणमोह थल पाऊँ।।
लब्धि सहज उपभोग प्राप्त करने का उद्यम ठानूँ।
आत्मस्वरूप अचंचल निर्मल इसको ही मैं जानूँ।।

ॐ ह्रीं श्री पृथक्त्ववितर्कवीचारधर्मध्यानसहित-उपभोगलब्धिधारक जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

ज्ञान प्राप्त कर फिर एकत्व वितर्क वीचार करूँ मैं।
परमानंदी सहजानंदी अनुपम स्वरस धरूँ मैं।।
लब्धि सहज उपभोग प्राप्त करने का उद्यम ठानूँ।
आत्मस्वरूप अचंचल निर्मल इसको ही मैं जानूँ।।

ॐ ह्रीं श्री एकत्ववितर्कवीचारशुक्लध्यानसहित-उपभोगलब्धिधारक जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

सूक्ष्म-क्रिया-प्रतिपाति ध्यान कर चौदहवें में जाऊँ।
योग अभाव करूँ मैं स्वामी आनंदामृत पाऊँ।।
लब्धि सहज उपभोग प्राप्त करने का उद्यम ठानूँ।
आत्मस्वरूप अचंचल निर्मल इसको ही मैं जानूँ।।

ॐ ह्रीं श्री सूक्ष्मक्रियाप्रतिपातिशुक्लध्यानसहित-उपभोग लब्धि धारक जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

अध्यवसानादि जीव हैं व्यवहार कथन यह जानो।
उपदेश जिनवरों के में आया है यह सब मानो।।

व्युपरत क्रिया निवृत्ति ध्यान से शेष प्रकृति सब जीतूँ।
भव भावों से प्रभो सदा को भली-भाँति मैं रीतूँ।।
लब्धि सहज उपभोग प्राप्त करने का उद्यम ठानूँ।
आत्मस्वरूप अचंचल निर्मल इसको ही मैं जानूँ।।

ॐ ह्रीं श्री व्युपरतक्रियानिवृत्तिशुक्लध्यानसहित-उपभोगलब्धिधारक जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

धर्मध्यान ही मूल हेतु है शुक्लध्यान का स्वामी।
लक्षण है उपयोग जीव का त्रैकालिक ध्रुवनामी।।
लब्धि सहज उपभोग प्राप्त करने का उद्यम ठानूँ।
आत्मस्वरूप अचंचल निर्मल इसको ही मैं जानूँ।।

ॐ ह्रीं श्री धर्मध्यानशुक्लभावसहित-उपभोगलब्धिधारकजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

शुक्लध्यान ही कारण है साक्षात् मोक्ष के सुख का।
यह पूरा होते ही रहता नाम न कोई दुख का।।
लब्धि सहज उपभोग प्राप्त करने का उद्यम ठानूँ।
आत्मस्वरूप अचंचल निर्मल इसको ही मैं जानूँ।।

ॐ ह्रीं श्री शुक्लध्यानफलसहित-उपभोग लब्धि धारक श्री जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

महार्घ्य

वीरछंद

भावतीर्थ ही कर्म मलों को क्षय करने में पूर्ण समर्थ।
भावतीर्थ बिन त्याग तपस्या व्रत संयम का लेश न अर्थ।।
द्वादशांग श्रुत ज्ञानसार है भेदज्ञान विज्ञान महान।
शुद्धात्मानुभूति से ही होता है भेदज्ञान विज्ञान।।
कर्म-जन्य दुख पीड़ा भय से चेतन होता है हैरान।
पर में आत्म-बुद्धि करते ही दुखी हो रहा है अनजान।।
पर कर्तृत्व भोक्तृत्व स्वामित्व भाव से है असमर्थ।

सेना संग राजा जाता सब कहते राजा जाता।
व्यवहार कथन है यह तो राजा तो एक ही जाता।।

भावतीर्थ ही कर्ममलों को क्षय करने में पूर्ण समर्थ।।
पर द्रव्यों में इष्ट-अनिष्ट बुद्धि सदा ही पातक है।
पंचेन्द्रिय विषयों में सुख की बुद्धि पूर्णतः घातक है।।
मिथ्याभ्रम के नाश बिना सारी जड़ क्रियादि घातक है।
नींव बिना निर्माण भवन का जैसे शीघ्र विनाशक है।।
भावतीर्थ का अवगाहन ही भव भय हरने में अव्यर्थ।
भावतीर्थ ही कर्ममलों को क्षय करने में पूर्ण समर्थ।।
शुद्ध सचेतन बुद्ध स्वयं तू केवलज्ञान स्वभावी है।
शुभभावों में उपादेयता से तू बना विभावी है।।
श्रुतसागर का शुद्धज्ञान जल ही परभाव अभावी है।
भावतीर्थ तू स्वयं अनंत गुणोदधि शिवसुख स्रावी है।।
भावतीर्थ की यात्रा बिन तो सारी तीर्थयात्रा व्यर्थ।
भावतीर्थ ही कर्ममलों को क्षय करने में पूर्ण समर्थ।।
ॐ ह्रीं श्री क्षायिक-उपभोगलब्धिधारकजिनेन्द्राय महार्घ्यं नि.।

जयमाला

छंद – मानव

पर्याय मूढ़ता से ही मैंने भव कष्ट उठाए।
निज के स्वभाव को भूला भवबंधन नहीं मिटाए।।
भोगे अनन्त दुख मैंने इस भवबंधन के द्वारा।
बस कर्माधीन रहा मैं संसार भ्रमण के द्वारा।।
मैं भावमरण करता हूँ प्रति समय मोह के द्वारा।
रागादिक पाप किए हैं शुद्धात्म द्रोह के द्वारा।।
श्री गुरु की परम कृपा से अब सिमट रहा मिथ्यातम।
ध्रुव द्रव्य आतमा जाना सर्वोत्कृष्ट जो अनुपम।।
उत्पाद-ध्रौव्य-व्यय युत है ध्रुव द्रव्य त्रिकाली सत है।
गुण-पर्यायों से भूषित निज द्रव्य सदा शाश्वत है।।

अध्यवसानादिक सब ही पर भाव जीव कहलाता।
व्यवहार यही आगम का निश्चय जीव एक ही होता।।

पर्याय समयवर्ती है प्रतिसमय बदलती जाती।
ध्रुवधाम त्रिकाली अनुपम सहवर्ती गुण की थाती।।
ध्रुव का अवलंबन लेकर मैं द्रव्यदृष्टि पाऊँगा।
पर्यायदृष्टि को तजकर निज वैभव दमकाऊँगा।।
यह दृढ़ निश्चय है मेरा अब कौन रोक सकता है।
रत्नत्रय पथ पर हूँ मैं अब कौन रोक सकता है।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिक-उपभोगलब्धिधारकजिनेन्द्राय जयमालापूर्णार्घ्यं नि.।

आशीर्वाद

दोहा

श्रेष्ठ लब्धि उपभोग पा, पाऊँ सौख्य अपार।
आत्मधर्म की शक्ति से, हो जाऊँ भव पार।।

इत्याशीर्वादः

卐

ना राग द्वेष जीव को मद मोह जीव को नाहीं।
प्रत्यय अरु कर्म नहीं हैं नो कर्म जीव को नाहीं।।

ॐ

श्री क्षायिक वीर्यलब्धि पूजन

स्थापना

छंद – ताटंक

क्षायिकवीर्यलब्धि पाने को अंतराय से द्वंद्व करूँ।
घातिकर्म विनशाऊँ सारे पूर्व बंध के फंद हरूँ।।
पूजन करके आत्मध्यान द्वारा मैं सम्यक् ध्यान करूँ।
जो संसार भाव भीतर है उसका प्रभु अवसान करूँ।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकवीर्यलब्धिधारकजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्री क्षायिकवीर्यलब्धिधारकजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री क्षायिकवीर्यलब्धिधारकजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

अष्टक

छंद – ताटंक

रत्नत्रय के शीतल जल से जिन पूजन कर लूँ सत्वर।
जन्म-मृत्यु का रोग विनाशूँ निज स्वभाव का कर आदर।।
अंतराय का सर्वनाश कर वीर्य अनंत प्रगट कर लूँ।
सबसे क्रूर कर्म यह बाधक इसकी सारी द्युति हर लूँ।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकवीर्यलब्धिप्राप्तजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि.।

रत्नत्रय का शुद्ध सुगंधित चंदन तिलक लगाऊँगा।
भवाताप संपूर्ण नष्ट कर शीतलता उर लाऊँगा।।
अंतराय का सर्वनाश कर वीर्य अनंत प्रगट कर लूँ।
सबसे क्रूर कर्म यह बाधक इसकी सारी द्युति हर लूँ।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकवीर्यलब्धिप्राप्तजिनेन्द्राय संसारमतापविनाशनाय चंदनं नि.।

ना वर्ग वर्गणा कोई कर्म स्पर्धक भी हैं नाही।
अध्यात्म स्थान न जीव को अनुभाग स्थान भी नाहीं।।

रत्नत्रय के भावपूर्ण अक्षत लाऊँगा गुणशाली
अक्षयपद पाऊँगा स्वामी अब तो सम्यक्विधि पा ली।।
अंतराय का सर्वनाश कर वीर्य अनंत प्रगट कर लूँ।
सबसे क्रूर कर्म यह बाधक इसकी सारी द्युति हर लूँ।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकवीर्यलब्धिप्राप्तजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि.।

रत्नत्रय के पुष्प सजाऊँ परम सुगंधित कामजयी।
कामबाण विध्वंस करूँ प्रभु पाऊँ निज गुणशीलमयी।।
अंतराय का सर्वनाश कर वीर्य अनंत प्रगट कर लूँ।
सबसे क्रूर कर्म यह बाधक इसकी सारी द्युति हर लूँ।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकवीर्यलब्धिप्राप्तजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि.।

रत्नत्रय के सुचरु भावमय अनुभव रस निर्मित लाऊँ।
नित्य निरोगी बनूँ सदा को क्षुधारोग पर जय पाऊँ।।
अंतराय का सर्वनाश कर वीर्य अनंत प्रगट कर लूँ।
सबसे क्रूर कर्म यह बाधक इसकी सारी द्युति हर लूँ।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकवीर्यलब्धिप्राप्तजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि.।

रत्नत्रय के दीप ज्योतिमय निज अंतर में करें प्रकाश।
मोह तिमिर मिथ्यात्व नष्ट कर पाऊँ केवलज्ञान प्रकाश।।
अंतराय का सर्वनाश कर वीर्य अनंत प्रगट कर लूँ।
सबसे क्रूर कर्म यह बाधक इसकी सारी द्युति हर लूँ।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकवीर्यलब्धिप्राप्तजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि.।

रत्नत्रय की धूप ध्यानमय पूर्ण देश संयमवाली।
अष्टकर्म विध्वंस करूँ प्रभु पाऊँ निज निधि गुणशाली।।
अंतराय का सर्वनाश कर वीर्य अनंत प्रगट कर लूँ।
सबसे क्रूर कर्म यह बाधक इसकी सारी द्युति हर लूँ।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकवीर्यलब्धिप्राप्तजिनेन्द्राय अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं नि.।

ना योगस्थान कहीं हैं ना बंध स्थान कहीं है।
ना उदय स्थान जीव को मार्गणास्थान नहीं है।।

रत्नत्रय तरु के फल पाऊँ महामोक्ष फल के दातार।
पद निष्कर्म शीघ्र पाऊँगा हो जाऊँगा भव के पार।।
अंतराय का सर्वनाश कर वीर्य अनंत प्रगट कर लूँ।
सबसे क्रूर कर्म यह बाधक इसकी सारी द्युति हर लूँ।।
ॐ ह्रीं श्री क्षायिकवीर्यलब्धिप्राप्तजिनेन्द्राय महामोक्षफलप्राप्तये फलं नि.।

रत्नत्रय के अर्घ्य चढ़ाऊँ परम विनय से हे स्वामी।
पद अनर्घ्य पाऊँगा अपना शाश्वत ध्रुव त्रिभुवन नामी।।
अंतराय का सर्वनाश कर वीर्य अनंत प्रगट कर लूँ।
सबसे क्रूर कर्म यह बाधक इसकी सारी द्युति हर लूँ।।
ॐ ह्रीं श्री क्षायिकवीर्यलब्धिप्राप्तजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं नि.।

अर्घ्यावली

वीरछंद

ज्ञानावरणी की स्थिति है कोड़ा-कोड़ी सागर तीस।
इसे नाश कर के हे स्वामी हो जाऊँ मैं भी जगदीश।।
क्षायिकवीर्यलब्धि मैं पाऊँ अंतराय का करूँ विनाश।
शुक्लध्यान की परम कृपा से पाऊँ केवलज्ञान प्रकाश।।
ॐ ह्रीं श्री ज्ञानावरणकर्म की तीस कोड़ाकोड़ीसागरस्थितिनाशकर्ता-अनंत-वीर्यलब्धिधारकजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

दर्शनावरणी की कोड़ाकोड़ी सागर तीस प्रमाण।
इसे नाश कर के हे स्वामी हो जाऊँ अरहंत महान।।
क्षायिकवीर्यलब्धि मैं पाऊँ अंतराय का करूँ विनाश।
शुक्लध्यान की परम कृपा से पाऊँ केवलज्ञान प्रकाश।।
ॐ ह्रीं श्री दर्शनावरणीकर्म की तीस कोड़ाकोड़ीसागरस्थितिनाशकर्ता-अनंतवीर्यलब्धिधारकजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

ना स्थिति बंध स्थान है ना संक्लेषस्थान जीव को।
ना विशुद्धि स्थान ना संयमलब्धि स्थान जीव को।।

कर्म वेदनीय की है कोड़ाकोड़ी सागर तीस प्रमाण।
इसे नाश करके हे स्वामी हो जाऊँ अरहंत महान।।
क्षायिकवीर्यलब्धि मैं पाऊँ अंतराय का करूँ विनाश।
शुक्लध्यान की परम कृपा से पाऊँ केवलज्ञान प्रकाश।।

ॐ ह्रीं श्री वेदनीयकर्म की तीस कोड़ाकोड़ीसागरस्थितिनाशकर्ता-अनंत-वीर्यलब्धिधारकजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

कर्म मोहनी की थिति सागर कोड़ाकोड़ी सत्तर जान।
महा भयंकर क्रूर यही है इसको जीत बनूँ भगवान।।
क्षायिकवीर्यलब्धि मैं पाऊँ अंतराय का करूँ विनाश।
शुक्लध्यान की परम कृपा से पाऊँ केवलज्ञान प्रकाश।।

ॐ ह्रीं श्री मोहनीयकर्म की सत्तर कोड़ाकोड़ीसागरस्थितिनाशकर्ता-अनंत-वीर्यलब्धिधारकजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

आयुकर्म की स्थिति केवल सागर है तैंतीस प्रमाण।
इसे नाश कर सिद्ध बनूँ मैं शीघ्र करूँ इसका अवसान।।
क्षायिकवीर्यलब्धि मैं पाऊँ अंतराय का करूँ विनाश।
शुक्लध्यान की परम कृपा से पाऊँ केवलज्ञान प्रकाश।।

ॐ ह्रीं श्री आयुकर्म की तैंतीस कोड़ाकोड़ीसागरस्थितिनाशकर्ता-अनंत-वीर्यलब्धिधारकजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

नामकर्म की स्थिति जानो कोड़ाकोड़ी बीस प्रमाण।
इसे नाश कर सिद्ध बनूँ मैं शीघ्र करूँ इसका अवसान।।
क्षायिकवीर्यलब्धि मैं पाऊँ अंतराय का करूँ विनाश।
शुक्लध्यान की परम कृपा से पाऊँ केवलज्ञान प्रकाश।।

ॐ ह्रीं श्री नामकर्म की बीस कोड़ाकोड़ीसागरस्थितिनाशकर्ता-अनंतवीर्य-लब्धिधारकजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

नहिं जीव स्थान जीव को ना गुणस्थान है जीव का।
यह सब पुद्गल द्रव्यात्मक परिणाम जानलो जीव का।।

गोत्रकर्म की स्थिति तो है कोड़ाकोड़ी बीस प्रमाण।
इसे नाश कर सिद्ध बनूँ मैं शीघ्र करूँ इसका अवसान।।
क्षायिकवीर्यलब्धि मैं पाऊँ अंतराय का करूँ विनाश।
शुक्लध्यान की परम कृपा से पाऊँ केवलज्ञान प्रकाश।।

ॐ ह्रीं श्री गोत्रकर्म की बीस कोड़ाकोड़ीसागरस्थितिनाशकर्ता-अनंतवीर्य-लब्धिधारकजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

अन्तराय की स्थिति कोड़ाकोड़ी सागर तीस प्रमाण।
इसे नाश अरहंत बनूँ मैं हो जाऊँ अरहंत महान।।
क्षायिकवीर्यलब्धि मैं पाऊँ अंतराय का करूँ विनाश।
शुक्लध्यान की परम कृपा से पाऊँ केवलज्ञान प्रकाश।।

ॐ ह्रीं श्री अन्तरायकर्म की तीस कोड़ाकोड़ीसागरस्थितिनाशकर्ता-अनंत-वीर्यलब्धिधारकजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

परम ज्योति परमात्मा पद हित परम ध्यान ही महा महान।
द्रव्य भाव नो कर्म नाश हित एकमात्र है उत्तम ध्यान।।
क्षायिकवीर्यलब्धि मैं पाऊँ अंतराय का करूँ विनाश।
शुक्लध्यान की परम कृपा से पाऊँ केवलज्ञान प्रकाश।।

ॐ ह्रीं श्री द्रव्यभाव नोकर्मनाशकर्ता-अनंतवीर्यलब्धिधारकजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

महार्घ्य

वीरछंद

ज्ञेय जानने में आता है उसे जानना ज्ञान स्वभाव।
ज्ञेय नहीं कारण विकार का है विकार का मूल विभाव।।
खुद ही राग-द्वेष करता है और ज्ञेय को देता दोष।
तू ज्ञायक आनंद-कंद ध्रुव पूर्ण ज्ञान का ही है कोष।।
श्रद्धा ज्ञान स्वरूपी निज चैतन्य-मूर्ति में मोह न रोष।
फिर भी इष्ट-अनिष्ट बुद्धि है निज में किया नहीं संतोष।।

वर्णादि गुणस्थानों तक जो भाव कहे हैं जीव के।
व्यवहार यही, निश्चय से नाहीं हैं कभी जीव के।।

शुद्ध बुद्ध परिपूर्ण ज्ञानघन तुझ में लेश नहीं परभाव।
ज्ञेय जानने में आता है उसे जानना ज्ञान स्वभाव।।
स्वयं भूल से अटक रहा है ज्ञेयों से कर राग विकार।
अपनी प्रभुता छोड़ कर रहा है तू पामरता स्वीकार।।
मोहमयी परिणति में ही तू मग्न हुआ है बारंबार।
निज परिणति का रूप न जाना जो है परम सौख्य आगार।।
निज प्रभुत्व स्वीकार करेगा तो होगा संसार अभाव।
ज्ञेय जानने में आता है उसे जानना ज्ञान स्वभाव।

जाननहार ज्ञान है केवल ज्ञेय प्रमेय जानने योग्य।
केवलज्ञान स्वरूप पूर्ण तू है बस यही मानने योग्य।।
पर पदार्थ में मोह ममत्वादिक है पूर्ण त्यागने योग्य।
है पर्याय विकारी तेरी जो है अभी नाशने योग्य।।
ज्ञान ज्ञेय संबंध समझ ज्ञाता बन हर कर्मों का घाव।
ज्ञेय जानने में आता है उसे जानना ज्ञान स्वभाव।।

तू अखंड अचलित, विकल्प से रहित अनंत शौर्य सम्पन्न।
सदा काल तू एक रूप है पूर्ण सौख्यमय नहीं विपन्न।।
द्रव्य-कर्म नो-कर्म भाव-कर्मों से भी तू बिलकुल भिन्न।
तू अविकारी शुद्ध बुद्ध शिव निज स्वभाव से सदा अभिन्न।।
तू तो बस केवल ज्ञायक है तुझ में पर का नहीं प्रभाव।
ज्ञेय जानने में आता है उसे जानना ज्ञान स्वभाव।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकवीर्यलब्धिधारकजिनेन्द्राय महार्घ्यं नि.।

जयमाला

छंद – सरसी

अनंतानुबंधी के क्षय बिन कैसा व्रत संयम।
समकित के बिन कैसे जा सकता है मिथ्यातम।।

संबंध जीव का इनसे सब नीर क्षीर व्रत जानो।
पर भाव न कोई जीव को उपयोग गुणाधिक मानो।।

अनंतानुबंधी जाते ही समता आएगी।
निज स्वभाव की महिमा उर अंतर में आएगी।।

देशव्रती बनते ही अप्रत्याख्यानी जाएगी।
संवर मय निर्जरा अनंत गुण हो जाएगी।।

भेद ज्ञान विज्ञान पूर्वक समकित लो इस क्षण।
अनंतानुबंधी के क्षय बिन कैसा व्रत संयम।।

महाव्रती बनते ही प्रत्याख्यानी जाएगी।
निश्चय तप की दिव्य प्रभा उज्ज्वलता लाएगी।।

शेष संज्वलन भी धीरे धीरे उड़ जाएगी।
जब तेरी गतिविधि शुद्धातम से जुड़ जाएगी।।

चार कषाय जाते ही हो केवलज्ञान स्वयम्।
अनंतानुबंधी के क्षय बिन कैसा व्रत संयम।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकवीर्यलब्धिधारकजिनेन्द्राय जयमालापूर्णार्घ्यं नि.।

आशीर्वाद

दोहा

वीर्यलब्धि से प्राप्त हो, केवल सौख्य स्वरूप।
चिदानन्द आनन्दमय, निज चेतन चिद्रूप।।

इत्याशीर्वादः

卐

जनता लुटती जिस पथ पर वह पथ लुटता है कहते।
कोई भी पथ लुटता है व्यवहार कथन यह कहते।।

ॐ

श्री क्षायिक सम्यग्दर्शनलब्धि पूजन

स्थापना

छंद – ताटंक

क्षायिक सम्यग्दर्शन लब्धि प्राप्त कर शिवपथ पर जाऊँ।
प्राप्त स्वरूपाचरण करूँ मैं शुद्ध आत्मा ही ध्याऊँ।।
पूजन करूँ विनय से स्वामी करूँ आत्मा का चिन्तन।
निज स्वभाव साधन के द्वारा नाश करो भव के बंधन।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकसम्यग्दर्शनलब्धिधारकजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्री क्षायिकसम्यग्दर्शनलब्धिधारकजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री क्षायिकस ग्दर्शनलब्धिधारकजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

अष्टक

छंद – ताटंक

सम्यग्दर्शन सरिता का जल त्रिविध व्याधियाँ क्षय करता।
ज्ञानस्वभाव शाश्वत अपना परभावों के दुख हरता।।
क्षायिक सम्यग्दर्शन के हित दर्शन मोह अभाव करूँ।
आत्मज्ञान की महा कृपा से दर्शनमयी स्वभाव वरूँ।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकसम्यग्दर्शनलब्धिधारकजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि.।

सम्यग्दर्शन सरिता तट का चंदन शीतल होता है।
भवाताप ज्वाला क्षय करता भवज्वर पूरा हरता है।।
क्षायिक सम्यक् दर्शन के हित दर्शन मोह अभाव करूँ।
आत्म ज्ञान की महा कृपा से दर्शनमयी स्वभाव वरूँ।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकसम्यग्दर्शनलब्धिधारकजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं नि.।

त्योंही नो कर्म का ही वर्ण देखकर कहते।
यह वर्ण जीव का जिनवर व्यवहार दृष्टि से कहते।।

सम्यग्दर्शन सरिता तट के अक्षत धवल परम उज्ज्वल।
शाश्वत अक्षयपद दाता हैं अन्तर्मन करते निर्मल।।
क्षायिक सम्यग्दर्शन के हित दर्शन मोह अभाव करूँ।
आत्मज्ञान की महा कृपा से दर्शनमयी स्वभाव वरूँ।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकसम्यग्दर्शनलब्धि धारकजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि.।

सम्यग्दर्शन सरिता तट के सुतरु पुष्प सुखदायी हैं।
काम व्याधि के क्षयकर्त्ता है। महाशील रस पायी हैं।।
क्षायिक सम्यग्दर्शन के हित दर्शन मोह अभाव करूँ।
आत्मज्ञान की महा कृपा से दर्शनमयी स्वभाव वरूँ।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकसम्यग्दर्शनलब्धिधारकजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि.।

सम्यग्दर्शन के नैवेद्य परम पावन अनुभव रसमय।
क्षुधारोग के क्षयकर्त्ता हैं परम तृप्तिदायक गुणमय।।
क्षायिक सम्यग्दर्शन के हित दर्शन मोह अभाव करूँ।
आत्मज्ञान की महा कृपा से दर्शनमयी स्वभाव वरूँ।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकसम्यग्दर्शनलब्धिधारकजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि.।

सम्यग्दर्शन के उज्ज्वल दीपों की दीपावलि नित नव्य।
दर्शन मोह नष्ट करती है आत्मतत्त्व श्रद्धायुत भव्य।।
क्षायिक सम्यग्दर्शन के हित दर्शन मोह अभाव करूँ।
आत्मज्ञान की महा कृपा से दर्शनमयी स्वभाव वरूँ।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकसम्यग्दर्शनलब्धिधारकजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि.।

यदि तुव मत में संसारी जीवों को वर्णादिक हैं।
तो संसारी सारे ही रुपित्व रूप से युत हैं।।

सम्यग्दर्शन ध्यान धूप ही अष्टकर्म क्षयकारी है।
नित्य निरंजन पद देती है भवसमुद्र दुखहारी है।।
क्षायिक सम्यग्दर्शन के हित दर्शन मोह अभाव करूँ।
आत्मज्ञान की महा कृपा से दर्शनमयी स्वभाव वरूँ।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकसम्यग्दर्शनलब्धिधारकजिनेन्द्राय अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं नि.।

सम्यग्दर्शन कल्पवृक्ष सम त्वरित मोक्षफल देता है।
जो प्राणी इसको पा लेता परम सौख्य उर लेता है।।
क्षायिक सम्यग्दर्शन के हित दर्शन मोह अभाव करूँ।
आत्मज्ञान की महा कृपा से दर्शनमयी स्वभाव वरूँ।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकसम्यग्दर्शनलब्धिधारकजिनेन्द्राय महामोक्षफलप्राप्तये फलं नि.।

सम्यग्दर्शन के निज गुणमय अर्घ्य अपूर्व बनाऊँ नाथ।
पद अनर्घ्य अपना प्रगट कर शाश्वत सुख उर झेलूँ नाथ।।
क्षायिक सम्यग्दर्शन के हित दर्शन मोह अभाव करूँ।
आत्मज्ञान की महा कृपा से दर्शनमयी स्वभाव वरूँ।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकसम्यग्दर्शनलब्धिधारकजिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं नि.।

अर्घ्यावली

छंद – चौपाई

क्षायिक समकित लब्धि सुहानी। इसे प्राप्त करते हैं ज्ञानी।
मिथ्यातम हर समकित पाते। निसर्ग अधिगमज ही वे पाते।।

ॐ ह्रीं श्री मिथ्यात्वभावनिवारकसम्यग्दर्शनलब्धिधारकजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

क्षायिक समकित लब्धि सुहानी। इसे प्राप्त करते हैं ज्ञानी।
समकित च्युत सासादन पाता। फिर वह निज पुरुषार्थ जगाता।।

ॐ ह्रीं श्री सासादनभावनिवारकसम्यग्दर्शनलब्धिधारकजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

संसार भाव संसारी जीवों को वर्णादिक हैं।
संसार मुक्त जीवों को ये भाव न वर्णादिक है।।

क्षायिक समकित लब्धि सुहानी। इसे प्राप्त करते हैं ज्ञानी।
सम्यक् मिथ्या तृतीय थान है। अल्पकाल है अल्पभान है।।
ॐ ह्रीं श्री क्षायिक-उपशमात् उपशमसम्यक्प्राप्तजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

क्षायिक सुमकित लब्धि सुहानी। इसे प्राप्त करते हैं ज्ञानी।
सप्त प्रकृति जब उपशम होती। समकित की निधि दृष्टित होती।।
ॐ ह्रीं श्री क्षायिक-उपशमात् उपशमसम्यक्प्राप्तजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

क्षायिक समकित लब्धि सुहानी। इसे प्राप्त करते हैं ज्ञानी।
प्रकृति मोह का उदय अभाव है। उपशम सत्तायुत स्वभाव है।।
ॐ ह्रीं श्री मोहनीयकर्मणःसप्तप्रकृति-उपशमात्उपशमक्षायिकसम्यक्त्व-धारक श्री जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

क्षायिक समकित लब्धि सुहानी। इसे प्राप्त करते हैं ज्ञानी।
क्षयोपशम निज अंतर में है। किन्तु ध्यान तो निज उत्तम है।।
ॐ ह्रीं श्री क्षमोपशमसम्यक्त्वसहितक्षयोपशमलब्धिप्राप्तजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

क्षायिक समकित लब्धि सुहानी। इसे प्राप्त करते हैं ज्ञानी।
मोह प्रकृति क्षय सप्त हो गई। क्षायिक श्रद्धा प्रकट हो गयी।।
ॐ ह्रीं श्री सम्यक् श्रद्धानसहितनिश्चयनयसम्यक्लब्धि धारकजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

सिद्ध समान निजंतर अनुभव। निश्चय क्षायिक समकित अभिनव।
आत्मतत्त्व ही है सर्वोत्तम। मोक्ष प्रदान हेतु है सक्षम।।
क्षायिक समकित लब्धि सुहानी। इसे प्राप्त करते हैं ज्ञानी।
आत्मतत्त्व श्रद्धान करूँगा। स्याद्वाद का वरण करूँगा।।
ॐ ह्रीं श्री निरंजननिराकार-अव्याबाधीसुखरूपक्षायिकसम्यग्दर्शनलब्धि -धारक श्री जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

ये सभी भाव जीवों के हैं ऐसा यदि मानेगा।
तो जीव अजीव में कुछ भी तो भेद नहीं जानेगा।।

महार्घ्य

छंद – ताटंक

जबतक शुद्ध स्वभाव अनुभवन जीव नहीं कर पाता है।
जहाँ-तहाँ मारा फिरता है नहीं मोक्ष में जाता है।।

निर्विकल्प एकाग्र ध्यान बिन परद्रव्यों में रमता है।
शुभभावों में उपादेय की बुद्धि उसी में जमता है।।
शुद्धभाव बिन क्रिया-काण्ड में जोर-शोर से थमता है।
अपना शुद्धस्वभाव ज्ञानमय उसकी ओर न थमता है।।
अनुभव रस का स्वाद न लेता पर के गाने गाता है।
जबतक शुद्ध स्वभाव अनुभवन जीव नहीं कर पाता है।।

नित निगोद से निकल चार गतियों में ही भरमाता है।
मुनि पद धार अनेक बार ग्रैवेयक तक हो आता है।।
ग्यारह अंग पूर्व नौ पाठी होकर भी दुख पाया है।
स्वपर भेद-विज्ञान बिना तो कष्ट अनंत उठाया है।।
आत्मज्ञान बिन भव-भव भटका औरों को भटकाता है।
जबतक शुद्ध स्वभाव अनुभवन जीव नहीं कर पाता है।।

पूर्ण अनंत चतुष्टय से सम्पन्न स्वयं का भान नहीं।
परद्रव्यों से पृथक् द्रव्य तू इसकी भी पहिचान नहीं।।
राग-द्वेष से खेल रहा है निज स्वरूप का ज्ञान नहीं।
राग पात्र का नाश किए बिन होगा कभी महान नहीं।।
पूर्ण ज्ञान दर्शन बल सुखमय होकर भी दुख पाता है।
जबतक शुद्ध स्वभाव अनुभवन जीव नहीं कर पाता है।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकसम्यग्दर्शनलब्धिधारकजिनेन्द्राय महार्घ्यं नि.।

यदि तेरा मत संसारी जीवों को वर्णादिक हैं।
तो संसारी सारे ही रुपित्व रूप से युत हैं।।

जयमाला

छंद – गीत

अभी-अभी मेरे मन में ये भाव आया है।।
तत्त्व उपदेश सुनाया गया है मेरे लिए।
मोह की नींद से उठाने को,
राग का राग सब हटाने को,
मेरा मिथ्यात्व तम मिटाने को,
ज्ञान का दीप जलाया गया है मेरे लिए।।
अभी अभी मेरे मन में ये भाव आया है।

शुभ अशुभ भाव में खड़ा था मैं,
चारों गतियों में ही पड़ा था मैं,
जा निगोदों में भी सड़ा था मैं,
किन्तु इस बार बचाया गया है मेरे लिए।।
अभी-अभी मेरे मन में ये भाव आया है।

मोह को जीत निज में आऊँगा,
आठों कर्मों को मैं जलाऊँगा,
पूर्ण सिद्धत्व शीघ्र पाऊँगा,
मोक्ष का द्वार सजाया गया है मेरे लिए।।
अभी-अभी मेरे मन में ये भाव आया है।

मैं चिदानंद शुद्ध ध्रुव चेतन,
मैं हूँ चैतन्य शाश्वत चिद्घन,
मैं तो काटूँगा ये जगत बंधन,
अपना ही जाप बताया गया है मेरे लिए।।
अभी-अभी मेरे मन में ये भाव आया है।

रुपित्व स्वगुण पुद्गल का सब पुद्गल हो जाएंगे।
जो मुक्ति प्राप्त है वे भी सब पुद्गल बन जाएंगे।।

मैं तो हूँ एक पूर्ण निश्चित ही,
मैं अधूरा नहीं हूँ किंचित भी,
शुद्धनय से हूँ सिद्ध समनित ही,
सिद्धों का धाम बताया गया है मेरे लिए।।
अभी-अभी मेरे मन में ये भाव आया है।
रत्न समकित की रोशनी छायी,
ज्ञान ने उठके ली है अंगड़ायी,
मुझे चारित्र भावना भायी,
भव से वैराग्य दिलाया गया है मेरे लिए।।
अभी अभी मेरे मन में ये भाव आया है।
लो मिली भेद-ज्ञान की धारा,
लगा अपना स्वरूप ही प्यारा,
श्री मुनि कुन्दकुन्द के द्वारा,
ये समयसार बनाया गया है मेरे लिए।।
अभी-अभी मेरे मन में ये भाव आया है।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकसम्यग्दर्शनलब्धिधारकजिनेन्द्राय जयमालापूर्णार्घ्यं नि.।

आशीर्वाद

दोहा

परम लब्धि सम्यक्त्व पा, करूँ मोह का नाश।
निज अंतर में प्रगट हो, केवलज्ञान प्रकाश।।

इत्याशीर्वादः

卐

जो पुद्गलमयी प्रकृति है वह कारण स्वरूप रचित हैं।
जो जीव समास कहे हैं वे जीव कहो कैसे हैं।।

ॐ

श्री क्षायिक दर्शनलब्धि पूजन

स्थापना

छंद – तातंक

कर्म दर्शनावरणी नाशूँ दर्शनलब्धि प्राप्त कर लूँ।
भेद सकल दर्शन आवरणी के सारे ही अब हर लूँ।।
लोकालोक सर्व का दृष्टा एक मात्र निज चेतन है।
अविनाशी सुख देनेवाला शुक्लध्यान निज केतन है।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकदर्शनलब्धिधारकजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्री. क्षायिकदर्शनलब्धिधारकजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री क्षायिकदर्शनलब्धिधारकजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

अष्टक

वीरछंद

शुक्लध्यान का जल लाऊँ प्रभु आत्मशक्ति का करूँ विकास।
जन्म-जरा-मरणादि रोग हर पाऊँ क्षायिक पूर्ण प्रकाश।।
कर्म दर्शनावरणी नाशूँ दर्शनलब्धि प्राप्त कर आज।
जीवनमुक्त दशा मैं पाऊँ मुनि बन हो जाऊँ जिनराज।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकदर्शनलब्धिधारकजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि.।

शुक्लध्यान का चंदन लाऊँ परमोज्ज्वल गुण से परिपूर्ण।
क्षय संसारताप कर स्वामी निज शिवसुख पाऊँ आपूर्ण।।
कर्म दर्शनावरणी नाशूँ दर्शनलब्धि प्राप्त कर आज।
जीवन मुक्त दशा मैं पाऊँ मुनि बन हो जाऊँ जिनराज।।

ॐ ह्रीं क्षायिक दर्शन लब्धि धारक श्री जिनेन्द्राय संसारताप विनाशनाय चंदनं नि.

इक द्वय त्रय चऊ पंचेन्द्रिय बादर व सूक्ष्म सब जानो।
पर्याप्त अपर्याप्तक जो नाम कर्म की प्रकृति मानो।।

शुक्ल ध्यान के अक्षत लाऊँ अक्षय पदवी प्राप्त करूँ।
गुण अनंत प्रगटाऊँ अपने ध्रुव शिवसुख उर व्याप्त करूँ।।
कर्म दर्शनावरणी नाशूँ दर्शनलब्धि प्राप्त कर आज।
जीवन मुक्त दशा मैं पाऊँ मुनि बन हो जाऊँ जिनराज।।
ॐ ह्रीं श्री क्षायिकदर्शनलब्धिधारकजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि.।

शुक्लध्यान के पुष्प भावमय लाऊँ कामव्याधि कर नाश।
महाशील गुण निज प्रगटाऊँ पाऊँ केवलज्ञान प्रकाश।।
कर्म दर्शनावरणी नाशूँ दर्शनलब्धि प्राप्त कर आज।
जीवन मुक्त दशा मैं पाऊँ मुनि बन हो जाऊँ जिनराज।।
ॐ ह्रीं श्री क्षायिकदर्शनलब्धिधारकजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं।

शुक्लध्यान के अनुभव रसमय सुचरु चढ़ाऊँ हे स्वामी।
क्षुधारोग विध्वंस करूँ मैं हो जाऊँ अन्तर्यामी।।
कर्म दर्शनावरणी नाशूँ दर्शनलब्धि प्राप्त कर आज।
जीवनमुक्त दशा मैं पाऊँ मुनि बन हो जाऊँ जिनराज।।
ॐ ह्रीं श्री क्षायिकदर्शनलब्धिधारकजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि.।

शुक्लध्यान के दीप चढ़ाऊँ मिथ्या विभ्रम नाश करूँ।
दर्शन अरु चारित्र मोह क्षय कर कैवल्य प्रकाश भरूँ।।
कर्म दर्शनावरणी नाशूँ दर्शनलब्धि प्राप्त कर आज।
जीवन मुक्त दशा मैं पाऊँ मुनि बन हो जाऊँ जिनराज।।
ॐ ह्रीं श्री क्षायिकदर्शनलब्धिधारकजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि.।

शुक्लध्यान की धूप प्राप्त कर अष्ट कर्म विध्वंस करूँ।
ज्ञानावरणादिक आठों कर्मों को मैं सर्वांश हरूँ।।
कर्म दर्शनावरणी नाशूँ दर्शनलब्धि प्राप्त कर आज।
जीवन मुक्त दशा मैं पाऊँ मुनि बन हो जाऊँ जिनराज।।
ॐ ह्रीं श्री क्षायिकदर्शनलब्धिधारकजिनेन्द्राय अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं नि.।

पर्याप्त अपर्याप्तक जो हैं सूक्ष्म और बादर सब।
यह जीव देह संज्ञा है आगम व्यवहार कथन सब।।

शुक्लध्यान तरु के फल लाऊँ महामोक्ष फल पाने को।
निष्कंटक जिनमार्ग प्राप्त कर लूँ मैं शिवपुर जाने को।।
कर्म दर्शनावरणी नाशूँ दर्शनलब्धि प्राप्त कर आज।
जीवन मुक्त दशा मैं पाऊँ मुनि बन हो जाऊँ जिनराज।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकदर्शनलब्धिधारकजिनेन्द्राय महामोक्षफलप्राप्तये फलं नि.।

शुक्लध्यान के अर्घ्य बनाऊँ पद अनर्घ्य प्रगटाऊँ नाथ।
नित्य निरंजन पदवी पाऊँ हो जाऊँ मैं त्वरित स्वनाथ।।
कर्म दर्शनावरणी नाशूँ दर्शनलब्धि प्राप्त कर आज।
जीवनमुक्त दशा मैं पाऊँ मुनि बन हो जाऊँ जिनराज।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकदर्शनलब्धिधारकजिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं नि.।

अर्घ्यावली

छंद – चान्द्रायण

अधो लोक में नर्क सात विख्यात हैं।
दर्शनलब्धि जिनागम में प्रख्यात है।।
आत्मतत्त्व ही सर्वोत्तम संसार में।
चहुंगति का दुख भरा हुआ कुविचार में।।

ॐ ह्रीं श्री नरकादिभूमि-आयामदर्शकक्षायिकदर्शनलब्धिधारक श्री जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

दस प्रकार के भवनवासी पहिचानिए।
दर्शनलब्धि महान हृदय में आनिए।।
सप्त तत्त्व श्रद्धानपूर्वक ज्ञान हो।
तो वसु कर्मों का भी प्रभु अवसान हो।।

ॐ ह्रीं श्री भवनवासीदेवानां भूमिका-आदिदर्शकदर्शनलब्धिधारक जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

है मोह कर्म उदय से जो गुणस्थान का वर्णन।
वह कहो आत्मा कैसे जो पूर्ण सदैव अचेतन।।

मध्यलोक में व्यंतरादि का वास है।
दर्शनलब्धि प्राप्ति का उर विश्वास है।।
नव तत्त्वों का दृढ़ श्रद्धान महान है।
जो करता वह बन जाता भगवान है।।

ॐ ह्रीं श्री व्यंतरदेवानां भूमिकायां आदिदर्शकदर्शनलब्धिधारकजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

सूर्य चंद्र आदिक पाँचों सुर ज्योतिषी।
दर्शनलब्धि हृदय में मेरे प्रभु बसी।।
सप्त तत्त्व श्रद्धा ही सम्यक् जानिए।
आत्मद्रव्य श्रद्धान ज्ञानमय मानिए।।

ॐ ह्रीं श्री ज्योतिषीदेवानां भूमिकायां आदिदर्शकदर्शनलब्धिधारक जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

ऊर्ध्व लोक में सोलह स्वर्ग सुजानिए।
दर्शनलब्धि महान हृदय में आनिए।।
छह द्रव्यों का ज्ञान शीघ्र ही कीजिए।
अपने आत्मद्रव्य के दर्शन लीजिए।।

ॐ ह्रीं श्री कल्पवासीदेवानां पुण्यस्वर्गादिषोडषस्वर्गदेवानां कायदर्शक-क्षायिकदर्शनलब्धिधारकजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

नव ग्रैवक में देव मात्र सातामयी।
दर्शनलब्धि महान घातिया दुखजयी।।
परम निजात्म तत्त्व ही जग में सार है।
राग-द्वेष का भाव पूर्ण निस्सार है।।

ॐ ह्रीं श्री ग्रैवेयकवासीदेवानां आयुआदिदर्शकक्षायिकदर्शनलब्धिधारक जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

संयोग अनादि काल से है जीव अजीव का जानो।
दृढ़ भेद ज्ञान करने का जिय अब तो निश्चय ठाने।।

नव अनुदिशि पंचोत्तर में अहमिन्द्र सुर।
दर्शनलब्धि प्राप्ति है आतुर प्रचुर।।
सप्त तत्त्व में मोक्ष तत्त्व ही श्रेष्ठ है।
आस्रव बंध भाव तो पूरा नेष्ठ है।।

ॐ ह्रीं श्री नव-अनुदिशिपंचोत्तरभूमिकानां अहमिन्द्रदेवानां आयुआदिदर्शक-क्षायिकदर्शनलब्धिधारकजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

अष्टम वसुधा त्रिलोकाग्र है सिद्धलोक।
दर्शनलब्धि हो तो दिखता है अलोक।।
संवर अरु निर्जरा भाव ही श्रेष्ठ है।
शेष भाव तो दुखदायी है नेष्ठ है।।

ॐ ह्रीं श्री अष्टममोक्षभूमिकावासीसिद्धानां दर्शकक्षायिकदर्शनलब्धिधारक-जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

छह द्रव्यों से लोक ठसाठस है भरा।
पा अलोक में केवल नभ ही है खरा।।
दर्शनलब्धि महान प्राप्त अब कीजिए।
दृष्टा होकर त्रैकालिक सुख लीजिए।।

ॐ ह्रीं श्री लोकाकाश-अलोकाकाशे समस्तद्रव्यदर्शकक्षायिकदर्शन-लब्धिधारकजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

महार्घ्य

छंद – ताटंक

शुद्ध बुद्धि की वृद्धि अनूठी सर्व ऋद्धियों की दाता।
निर्विकल्प निश्चल समाधि ही सर्व सिद्धियों की दाता।।
पूर्ण ज्ञानमय निज स्वभाव पर ही जब होती है प्रभु दृष्टि।
अनुभव रसमय पीयूषामृत की तब ही होती है वृष्टि।।

क्रोधादिक में कर वर्त्तन जिय प्रवर्त्तमान क्रोधों में।
कर्मों का संचय करता बंधित सर्वज्ञ ज्ञान में।।

केवल ज्ञाता-दृष्टा बनकर चेतन हो जाता सम दृष्टि।
तीन शल्य सातों भय से हो जाता विरहित सम्यग्दृष्टि।।
ज्ञानी बनकर ज्ञान-चेतना का अनुभव प्रतिपल आता।
शुद्ध बृद्धि की वृद्धि अनूठी सर्व ऋद्धियों की दाता।।

अमल अतुल अविकल स्वरूप जब पूर्ण दृष्टि में आता है।
अविनाशी परिपूर्ण अतीन्द्रिय सुखसागर लहराता है।।
एक स्वसंवेदन ही जब प्रत्यक्ष प्रति समय आता है।
केवलज्ञान सूर्य ज्योतिर्मय का प्रकाश छा जाता है।।
कृतकृत्य सिद्धत्व स्वपद जिय सादि-अनंत पूर्ण पाता।
शुद्ध बुद्धि की वृद्धि अनूठी सर्व ऋद्धियों की दाता।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकदर्शनलब्धिधारकजिनेन्द्राय महार्घ्यं नि.।

जयमाला

छंद – नवगीत

अंतर में लहरायी ज्ञान की हिलोर।
चेतन ने पायी है समकित की भोर।।

पापों की नागफनी नष्ट हो गई।
व्यसनों की बेल भी विनष्ट हो गई।।
बंधमयी मोहदृष्टि भ्रष्ट हो गई।
वीतराग भावना प्रकृष्ट हो गई।।
चेतन के चरण बढ़े शिवपथ की ओर।
अंतर में लहरायी ज्ञान की हिलोर।।

परिणति विभाव रूप रोती है खीझ।
चेतन ने बोए हैं शिव-तरु के बीज।।
परिणति स्वभाव भरी नाच रही रीझ।
कुछ दिन में चेतन तो जाएगा सीझ।।

जब जीव आत्मा आस्रव अंतर विशेष को जाने।
तब उसे न बंधन होगा जो निज स्वरूप को जाने।।

राग-द्वेष आदि का चलता न जोर।
अंतर में लहरायी ज्ञान की हिलोर।।

भव तन भोगों से अब हो गया उदास।
निज के स्वरूप का हो रहा विकास।।
रागों का दूर हुआ अब तो संत्रास।
चेतन की बगिया में आया मधु मास।।
बरस रहा शुद्ध नीर घनघोर।
अंतर में लहरायी ज्ञान की हिलोर।।

अनंतानुबंधी तो हो गयी विनाश।
तीनों कषायों का भी होगा ही नाश।।
परम ज्ञान सूर्य का हो गया प्रकाश।
पाया है चेतन ने शुद्ध चिदाकाश।।
प्रगटी निज अँगना में केवल रवि भोर।
अंतर में लहरायी ज्ञान की हिलोर।।

संयम के बिरवों की आयी सुगंध।
आस्रव के द्वार सभी हो गए हैं बंद।।
संवर ने रोक दिए कर्मों के बंध।
निर्जरा के नृत्य ने कर दिया अबंध।।
हर्षित प्रफुल्लित है चेतन चकोर।
अंतर में लहरायी ज्ञान की हिलोर।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकदर्शनलब्धिधारकजिनेन्द्राय जयमालापूर्णार्घ्यं नि.।

आशीर्वाद

दोहा

दर्शन लब्धि महान पा, पाऊँ केवलज्ञान।
परमानंद महान बन, पाऊँ पद निर्वाण।।

इत्याशीर्वादः

卐

विपरीत अशुचि दुख कारण शुभ-अशुभ आस्रव जानो।
इन से निवृत्ति का उद्यम अपना कर्तव्य पिछानो।।

ॐ

श्री क्षायिक ज्ञानलब्धि पूजन

स्थापना

वीरछंद

क्षायिक सम्यग्ज्ञान लब्धि पा प्रगटाऊँगा केवलज्ञान।
त्रेसठ कर्म प्रकृतियाँ नाशूँ घाति कर्म करके अवसान।।
ज्ञानलब्धि बिन कभी न मिलता एकबार निज निर्वाण।
समकित के बल से ही पाऊँ निज परमार्थ शीघ्र भगवान।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकज्ञानलब्धिधारकजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्री क्षायिकज्ञानलब्धिधारकजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री क्षायिकज्ञानलब्धिधारकजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

अष्टक

वीरछंद

शीतल जल की निर्मल धारा हे प्रभु चरण चढ़ाऊँ आज।
जन्म जरादिक क्षय करने शिवपथ पर चरण बढ़ाऊँ आज।।
क्षायिक ज्ञानलब्धि पाने को शुद्ध ज्ञान ही ध्याऊँ आज।
केवलज्ञान प्रगट कर अपना पद सर्वज्ञ सजाऊँ आज।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकज्ञानलब्धिधारकजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि.।

मलयागिर का शीतल चंदन पूर्ण सुगंधित लाऊँ आज।
भवाताप हर ध्यान करूँ निज भवज्वर पूर्ण मिटाऊँ आज।।
क्षायिक ज्ञानलब्धि पाने को शुद्ध ज्ञान ही ध्याऊँ आज।
केवलज्ञान प्रगट कर अपना पद सर्वज्ञ सजाऊँ आज।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकज्ञानलब्धिधारकजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं नि.।

मैं दर्शन ज्ञान स्वरूपी हूँ एक शुद्ध ममत्व बिन।
इसमें थित लीन रहूँ मैं आस्रव क्षय कर दूँ गिन-गिन।।

अक्षय शालि अखंडित उज्ज्वल धवल भावमय लाऊँ आज।
अक्षय पद की प्राप्ति करूँ प्रभु गुण अखंड प्रगटाऊँ आज।।
क्षायिक ज्ञानलब्धि पाने को शुद्ध ज्ञान ही ध्याऊँ आज।
केवलज्ञान प्रगट कर अपना पद सर्वज्ञ सजाऊँ आज।।
ॐ ह्रीं श्री क्षायिकज्ञानलब्धिधारकजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि.।

पुष्प सुगंधित परम सुकोमल हे प्रभु चरण चढ़ाऊँ आज।
कामबाण का कष्ट नाश कर परमशील गुण पाऊँ आज।।
क्षायिक ज्ञानलब्धि पाने को शुद्ध ज्ञान ही ध्याऊँ आज।
केवलज्ञान प्रगट कर अपना पद सर्वज्ञ सजाऊँ आज।।
ॐ ह्रीं श्री क्षायिकज्ञानलब्धिधारकजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि.।

अनुभव रसमय सुचरु बना कर जिन चरणाग्र चढ़ाऊँगा आज।
क्षुधा व्याधि विध्वंस करूँ प्रभु परमतृप्त पद पाऊँ आज।।
क्षायिक ज्ञानलब्धि पाने को शुद्ध ज्ञान ही ध्याऊँ आज।
केवलज्ञान प्रगट कर अपना पद सर्वज्ञ सजाऊँ आज।।
ॐ ह्रीं श्री क्षायिकज्ञानलब्धिधारकजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि.।

जगमग-जगमग दीप ज्योतिमय अंतरंग में लाऊँ आज।
भव विभ्रम का नाश करूँ प्रभु केवलज्ञान उपाऊँ आज।।
क्षायिक ज्ञानलब्धि पाने को शुद्ध ज्ञान ही ध्याऊँ आज।
केवलज्ञान प्रगट कर अपना पद सर्वज्ञ सजाऊँ आज।।
ॐ ह्रीं श्री क्षायिकज्ञानलब्धिधारकजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि.।

दश धर्मों की धूप ध्यानमय अति पवित्र प्रभु लाऊँ आज।
वसु कर्मों को नष्ट करूँ पद नित्य निरंजन पाऊँ आज।।
क्षायिक ज्ञानलब्धि पाने को शुद्ध ज्ञान ही ध्याऊँ आज।
केवलज्ञान प्रगट कर अपना पद सर्वज्ञ सजाऊँ आज।।
ॐ ह्रीं श्री क्षायिकज्ञानलब्धिधारकजिनेन्द्राय अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं नि.।

महामोक्ष पाने को प्रभु धर्मध्यान फल लाऊँ आज।
अंतिम शुक्लध्यान के द्वारा मुक्तिपुरी में जाऊँ आज।।
क्षायिक ज्ञानलब्धि पाने को शुद्ध ज्ञान ही ध्याऊँ आज।
केवलज्ञान प्रगट कर अपना पद सर्वज्ञ सजाऊँ आज।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकज्ञानलब्धिधारकजिनेन्द्राय महामोक्षफलप्राप्तये फलं नि.।

निज गुण अर्घ्य अपूर्व बनाकर तुमको भेंट चढ़ाऊँ आज।
पद अनर्घ्य प्रगटा कर प्रभु निष्कर्म दशा प्रगटाऊँ आज।।
क्षायिक ज्ञानलब्धि पाने को शुद्ध ज्ञान ही ध्याऊँ आज।
केवलज्ञान प्रगट कर अपना पद सर्वज्ञ सजाऊँ आज।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकज्ञानलब्धिधारकजिनेन्द्राय अनर्घ्यपदप्राप्तये अर्घ्यं नि.।

अर्घ्यावली

छंद – मराठा माधवी

पंच स्थावर और जीव त्रस सूक्ष्म अरु बादर जानिए।
ज्ञानलब्धि की प्राप्ति हेतु केवल निज को पहिचानिए।।
भेद ज्ञान के बिना असंभव सम्यग्दर्शन जानिए।
अतः आप श्रद्धा पूर्वक निज आत्म-तत्त्व को मानिए।।

ॐ ह्रीं श्री त्रसस्थावरसूक्ष्मबादरजीवानां आयुआदिज्ञायकज्ञानलब्धिधारक-जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

धर्माधर्माकाश काल पुद्गल पाँचों को जानिए।
ज्ञानलब्धि की प्राप्ति हेतु केवल निज को पहिचानिए।।
सम्यग्दर्शन होने पर ही होता सम्यग्ज्ञान है।
समकित के बिन ज्ञान जगत का सारा ही अज्ञान है।।

ॐ ह्रीं श्री धर्माधर्माकाशपुद्गलादिपंचप्रकार अजीवपदार्थस्वरूपज्ञायक-ज्ञानलब्धिजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

बहु भाँति कर्म पुद्गल सब ज्ञानी जाना करता है।
पर द्रव्य पर्याय न प्रणमे ना ग्रहता न उपजता है।।

भाव शुभाशुभ आस्रव के सत्तावन भेद पिछानिए।
ज्ञानलब्धि की प्राप्ति हेतु केवल निज को पहिचानिए।।
सम्यग्ज्ञान बिना सम्यक् चारित्र नहीं होता कभी।
बिना ज्ञान के क्रिया व्यर्थ है भवदुखदायी है सभी।।
ॐ ह्रीं श्री मिथ्यावादिसत्तवनआश्रवादिभावनां स्वरूपज्ञायकज्ञानलब्धि-धारकजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

तीव्र मंद अरु मध्य कषायें जान सभी को जानिए।
ज्ञानलब्धि की प्राप्ति हेतु केवल निज को पहिचानिए।।
जप तप व्रत संयम सारे ही समकित बिन बेकार हैं।
शिवपथ से तो बहुत दूर हैं मात्र स्वर्ग के द्वार हैं।।
ॐ ह्रीं श्री तीव्रमंदमध्यकषाय ज्ञायकज्ञानलब्धिधारकजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

संवर पूर्वक सम्यक् तप ही भावमयी उर जानिए।
ज्ञानलब्धि की प्राप्ति हेतु केवल निज को पहिचानिए।।
संवर के सत्तावन भेद जान आस्रव से रीतिए।
फिर निर्जरा तत्व को पाकर वसु कर्मों को जीतिए।।
ॐ ह्रीं श्री व्रतसमितिगुप्तियुत-सत्तावन संवरभेदज्ञायकज्ञानलब्धिधारक-जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

द्रव्य भावना कर्म नाश कर सिद्ध स्वपद उर आनिए।
ज्ञानलब्धि की प्राप्ति हेतु केवल निज को पहिचानिए।।
महा मोक्ष फल पाने का है अनुपम उद्यम कीजिए।
त्रिलोकाग्र जा सिद्धशिला पर शाश्वत जीवन जीतिए।।
ॐ ह्रीं श्री द्रव्यकर्मभाव-नोकर्मआदि ज्ञायक ज्ञानलब्धिधारकजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

सोलह कारण दर्श विशुद्धि भावना पूर्वक जानिए।
ज्ञानलब्धि की प्राप्ति हेतु केवल निज को पहिचानिए।।

बहु भाँति स्व परिणामों को ज्ञानी जाना करता है।
पर द्रव्य पर्याय नप्रणमो ना ग्रहता न उपजता है।।

प्रकृति तीर्थंकर का बंध कराती है जो भावना।
मोक्ष प्राप्ति में ये भी बाधक, साधक है निज साधना।।

ॐ ह्रीं श्री सोलह कारण दर्शन विशुद्धि आदि पुण्य प्रकृतियाँ शुभाशुभभाव-ज्ञायकज्ञानलब्धिधारकजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

पंच पाप फल इतर निगोद महा दुखदायी जानिए।
ज्ञानलब्धि की प्राप्ति हेतु केवल निज को पहिचानिए।।
भव भावों से सदा-सदा को अब अपना दुख मोड़िए।
साता का भी लोभ न कीजे निज को निज से जोड़िए।।

ॐ ह्रीं श्री पंचपाप फल इतर निगोद आदि ज्ञायकज्ञानलब्धिधारक जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

आत्मोन्नति के लिए आत्मा को ही केवल जानिए।
ज्ञानलब्धि की प्राप्ति हेतु केवल निज को पहिचानिए।।
मोहनीय का सत्तर कोड़ा कोड़ी सागर बंध है।
एक समय का बंध दुखमयी पूरा-पूरा अंध है।।

ॐ ह्रीं त्रसस्थावर सूक्ष्मबादरजीवानां आयु-आदिज्ञायकज्ञानलब्धिधारक-जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

महार्घ्य

वीरछंद

अशुभभाव में हेयबुद्धि है शुभ में उपादेय की बुद्धि।
परद्रव्यों में इष्ट-अनिष्ट विषमता की है भरी कुबुद्धि।।
जबतक मोह तभीतक ही चारों कषाय का बंधन है।
जबतक राग द्वेष तबतक चारों गतियों का क्रन्दन है।।

आस्रव की दुखदायी धारा में जबतक अवगाहन है।
संवर और निर्जरा कैसी हुआ न सम्यग्दर्शन है।।
वस्तु स्वरूप नहीं समझा तो कैसे होगी दर्श विशुद्धि।
अशुभभाव में हेयबुद्धि है शुभ में उपादेय की बुद्धि।।

फल पुद्गल कर्म अनंते ज्ञानी जाना करता है।
पर द्रव्य पर्याय न प्रणमे ना ग्रहता न उपजता है।।

भेद-ज्ञान होते ही मिटते मोह-राग-द्वेषों के फंद।
ज्ञान आचरण बिना नहीं तू पा सकता समत्व के छंद।।
अरे ज्ञाननय और क्रियानय दोनों की मैत्री ले संग।
नहीं एक से कार्य बनेगा खूब सोच ले ओ मति मंद।।

है व्यवहार लीन जबतक तू निश्चय के बिन कैसी शुद्धि।
अशुभभाव में हेयबुद्धि है शुभ में उपादेय की बुद्धि।।
भव-तन-भोगों में जबतक रुचि तबतक होगी नहीं सुबुद्धि।
तत्त्वों का निर्णय करते ही हो जाती है स्वयं विशुद्धि।।

जितनी-जितनी वीतरागता उतनी-उतनी होगी शुद्धि।
जितना-जितना राग-द्वेष है उतनी-उतनी शेष अशुद्धि।।
पूर्ण शुद्धि होते ही होगी निश्चित सिद्ध स्वपद की सिद्धि।
अशुभभाव में हेय-बुद्धि है शुभ में उपादेय की बुद्धि।।

पुण्य-पाप में भेद-भाव ही जीवों को बहकाता है।
दोनों आस्रव के बेटे हैं यही बंध दुखदाता है।।
आस्रव हेय जानकर जो भी उपादेय निज ध्याता है।
पूर्ण शुद्ध पर्याय प्रगट कर महामोक्ष पद पाता है।।

निज अभेद के निश्चय बिन क्या हो सकती है परम विशुद्धि।
अशुभभाव में हेयबुद्धि है शुभ में उपादेय की बुद्धि।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकज्ञानलब्धिधारकजिनेन्द्राय महार्घ्यं नि.।

जयमाला

छंद – मराठा माधवी

दृष्टि अपेक्षा से तो सम्यग्दृष्टि सदा ही मुक्त है।
शुद्ध त्रिकाली ध्रुव स्वरूप निज गुण अनंत से युक्त है।।
अनन्तानुबंधी अभाव कर सम्यक् पथ पर आ गया।
भेद-ज्ञान की महिमा आयी निज स्वरूप मन भा गया।।

इस भाँति द्रव्य पुद्गल भी निज भाव रूप परिणमता।
पर द्रव्य पर्याय न प्रणमे ना ग्रहण करे न उपजता।।

पर पदार्थ श्रद्धा में छोड़ ज्ञान भाव उर छा गया।
आत्म गगन में समता आयी निज स्वभाव रस पा गया।।
पर कर्तृत्वभाव से अब तो क्षण में हुआ विमुक्त है।
दृष्टि अपेक्षा से तो सम्यग्दृष्टि सदा ही मुक्त है।।
चरित मोह की कमजोरी से बिन संयम दुर्बल रहा।
संवरभाव जगा कर उर में यह आस्रव को दल रहा।।
निज श्रद्धान अटूट पूर्ण है नहीं मोह से छल रहा।
द्रव्य-भाव संयममय मुनि बनने को सदा मचल रहा।।
बाह्यान्तर मुनि हुआ नहीं पर मोक्षमार्ग से युक्त है।
दृष्टि अपेक्षा से तो सम्यग्दृष्टि सदा ही मुक्त है।।
भावलिंग बिन द्रव्यलिंग का तनिक नहीं कुछ मूल है।
अविरत चौथा गुणस्थान भी शिवपथ में बहुमूल्य है।।
बिन समकित तप त्याग आदि सब दो कौड़ी की धूल है।
तत्त्वों के सम्यक् निर्णय बिन अरे मूल में भूल है।।
सम्यग्दर्शन का साधन ही शिवपथ में उपयुक्त है।।
दृष्टि अपेक्षा से तो सम्यग्दृष्टि सदा ही मुक्त है।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकज्ञानलब्धिधारकजिनेन्द्राय जयमालापूर्णार्घ्यं नि.।

आशीर्वाद

दोहा

ज्ञान लब्धि की कृपा से, पाऊँ केवलज्ञान।
केवलज्ञान महान पा, पाऊँ पद निर्वाण।।

इत्याशीर्वादः

卐

जीव भाव हेतु पा पुद्गल ज्यों कर्मरूप परिणमता।
पुद्गल कर्मों के निमित्त से त्यों जीव सदा परिणमता।।

ॐ

श्री क्षायिक चारित्रलब्धि पूजन

स्थापना

छंद – ताटंक

प्रभु चारित्र लब्धि क्षायिक पा निजाचरण सम्यक् पाऊँ।
स्वपर प्रकाशक ज्ञान प्राप्त कर निज स्वभाव में ही आऊँ।।
निज निश्चय चारित्र प्रगट करने का अवसर आया है।
केवल निज चारित्र श्रेष्ठ है ऋषि मुनियों ने गाया है।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकचारित्रलब्धिधारकजिनेन्द्र! अत्र अवतर अवतर संवौषट्।
ॐ ह्रीं श्री क्षायिकचारित्रलब्धिधारकजिनेन्द्र! अत्र तिष्ठ तिष्ठ ठः ठः स्थापनम्।
ॐ ह्रीं श्री क्षायिकचारित्रलब्धिधारकजिनेन्द्र! अत्र मम सन्निहितो भव भव वषट्।

अष्टक

छंद – विधाता

जन्म-मरणादि दुख क्षय हित शरण में आज आया हूँ।
शुद्ध जल ज्ञान भावी प्रभु भावमय आज लाया हूँ।।
नाश चारित्र मोह करके ज्ञान कैवल्य उपजाऊँ।
शुद्ध चारित्र क्षायिक पा निजानंदी मैं हो जाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकचारित्रलब्धिधारकजिनेन्द्राय जन्मजरामृत्युविनाशनाय जलं नि.।

भवातप नाश करने का किया है आज दृढ़ निश्चय।
निरामय शुद्ध चंदन का तिलक पाया है ध्रुव शिवमय।।
नाश चारित्र मोह करके ज्ञान कैवल्य उपजाऊँ।
शुद्ध चारित्र क्षायिक पा निजानंदी मैं हो जाऊँ।।

ॐ ह्रीं क्षायिकचारित्रलब्धिधारकजिनेन्द्राय संसारतापविनाशनाय चंदनं नि.।

गुण कर्म जीव ना करता ना कर्म जीव गुण करता।
अन्योन्य निमित्त से द्वय का परिणाम हुआ ही करता।।

भवोदधि पार करने को स्वपद अक्षय सजाऊँगा।
परम उज्ज्वल स्व अक्षत ला परम सुख शीघ्र पाऊँगा।।
नाश चारित्र मोह करके ज्ञान कैवल्य उपजाऊँ।
शुद्ध चारित्र क्षायिक पा निजानंदी मैं हो जाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकचारित्रलब्धिधारकजिनेन्द्राय अक्षयपदप्राप्तये अक्षतान् नि.।

काम की व्याधि हरने को बनूँ निष्काम हे स्वामी।
पुष्प पा शील गुणवाले जपूँ निज भाव अभिरामी।।
नाश चारित्र मोह करके ज्ञान कैवल्य उपजाऊँ।
शुद्ध चारित्र क्षायिक पा निजानंदी मैं हो जाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकचारित्रलब्धिधारकजिनेन्द्राय कामबाणविध्वंसनाय पुष्पं नि.।

क्षुधा की व्याधियाँ हरने स्वयं का ध्यान ध्याऊँगा।
स्वानुभव के सुचरु लाकर आपको ही चढ़ाऊँगा।।
नाश चारित्र मोह करके ज्ञान कैवल्य उपजाऊँ।
शुद्ध चारित्र क्षायिक पा निजानंदी मैं हो जाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकचारित्रलब्धिधारकजिनेन्द्राय क्षुधारोगविनाशनाय नैवेद्यं नि.।

मोह मिथ्यात्व तम हरने हृदय समभाव लाऊँगा।
दीप ज्योतिर्मयी पावन चरण में प्रभु चढ़ाऊँगा।।
नाश चारित्र मोह करके ज्ञान कैवल्य उपजाऊँ।
शुद्ध चारित्र क्षायिक पा निजानंदी मैं हो जाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकचारित्रलब्धिधारकजिनेन्द्राय मोहान्धकारविनाशनाय दीपं नि.।

कर्म आठों को क्षय करने धूप दशधर्म लाऊँगा।
दशा निष्कर्म अति पावन सदा को नाथ पाऊँगा।
नाश चारित्र मोह करके ज्ञान कैवल्य उपजाऊँ।
शुद्ध चारित्र क्षायिक पा निजानंदी मैं हो जाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकचारित्रलब्धिधारकजिनेन्द्राय अष्टकर्मविध्वंसनाय धूपं नि.।

इस कारण से यह आत्मा कर्त्ता अपने भावों से।
पर पुद्गल कर्मों के कृत का कर्त्ता ना भावों से।।

मोक्ष फल प्राप्त करने का सुदृढ़ निश्चय किया मैंने।
निरामय भावना का फल प्रभो अब पा लिया मैंने।।
नाश चारित्र मोह करके ज्ञान कैवल्य उपजाऊँ।
शुद्ध चारित्र क्षायिक पा निजानंदी मैं हो जाऊँ।।

ॐ ह्रीं क्षायिकचारित्रलब्धिधारकजिनेन्द्राय महामोक्षफलप्राप्तये फलं नि.।

स्वपद पाऊँ अनर्घ्य अपना यही बल मुझको दो स्वामी।
अर्घ्य यह ज्ञान गुणमय हो यही है भावना नामी।।
नाश चारित्र मोह करके ज्ञान कैवल्य उपजाऊँ।
शुद्ध चारित्र क्षायिक पा निजानंदी मैं हो जाऊँ।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकचारित्रलब्धिधारकजिनेन्द्राय अनर्घ्यपद प्राप्तये अर्घ्यं नि.।

अर्घ्यावली

छंद – चान्द्रायण

तज पंचेन्द्रिय पंच विषय की वासना।
चारित्रलब्धि प्राप्ति की हो दृढ़-साधना।।
आत्म-ध्यान चारित्र परम मंगलमयी।
निश्चयपूर्वक होता है यह भवजयी।।

ॐ ह्रीं श्री पंचेन्द्रियविषयभोगविरक्तभावधारी क्षायिकचारित्रलब्धिधारक-जिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

एकेन्द्रिय त्रस-थावर जीव पिछान लो।
चारित्रलब्धि प्राप्ति हित निज को जान लो।।
आत्म-ज्ञान ही श्रेष्ठ मूल चारित्र का।
मोक्ष प्रदाता पावन परम पवित्र का।।

ॐ ह्रीं श्री एकेन्द्रियादि त्रसस्थावरजीवानां अनुकंपाभावधारीक्षायिकचारित्र-लब्धिधारकजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

मन-वच-तन सावद्य भोग सब त्यागिए।
चारित्रलब्धि प्राप्ति हित भव से भागिए।।

तन जीव एक हैं दोनों व्यवहार वचन यह जानो।
निश्चय से जीव देह को तुम एक पदार्थ न मानो।।

आत्म-ध्यान ही पूर्ण सुखों का मूल है।
सामायिक चारित्र श्रेष्ठ अनुकूल है।।

ॐ ह्रीं श्री सर्वसावद्यभोगविरतिप्राप्त सामायिकचारित्रप्राप्त क्षायिकचारित्र-लब्धिधारकजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

हैं प्रमाद में गर्भित पाप कषाय सब।
चारित्रलब्धि प्राप्ति हित कीजे ध्यान अब।।
छेदोपस्थापन चारित्र महान है।
प्रायश्चित्त पूर्वक ही होता ध्यान है।।

ॐ ह्रीं श्री छेदोपस्थापनाचारित्र प्राप्तक्षायिकचारित्र लब्धिधारकजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

पूर्ण परिग्रह रहित शुद्ध चारित्र हो।
चारित्रलब्धि प्राप्ति का भाव पवित्र हो।।
षट्कायिक जीवों की रक्षा श्रेष्ठ है।
यदि प्रमाद है तो वह पूरा नेष्ठ है।।

ॐ ह्रीं श्री परिहारविशुद्धिचारित्रप्राप्तक्षायिक चारित्रलब्धिधारकजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

चारित्र सूक्ष्म सांपराय उर आनिए।
चारित्रलब्धि प्राप्ति हित निज को जानिए।।
दसवें गुणस्थान तक होता है सदा।
आगे इसका श्राप नहीं है सर्वथा।।

ॐ ह्रीं श्री सूक्ष्मसांपरायचारित्रप्राप्तक्षायिक चारित्रलब्धिधारकजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

यथाख्यात चारित्र हृदय में आनिये।
चारित्र लब्धि प्राप्ति हित निज को जानिये।।
गुण स्थान चौदहवें तक यह है पवित्र।
सर्वोत्तम है परम श्रेष्ठ है यह चरित्र।।

ॐ ह्रीं श्री पंचेन्द्रियविषयविरक्तभावधारीयथाख्यातचारित्रप्राप्तक्षायिक चारित्रलब्धिधारकजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

आत्मा निज को ही करता मंतव्य यही निश्चय का।
निजका ही भोक्ता है सुन हे शिष्य कथन जिनवर का।।

निश्चय चारित्र पूर्ण प्राप्त कर लीजिए।
चारित्रलब्धि प्राप्ति हित संयम लीजिए।।
नयातीत पक्षातिक्रान्त हो जाइये।
शाश्वत त्रैकालिक शिवसुख नित पाइये।।

ॐ ह्रीं श्री निश्चयचारित्रप्राप्तक्षायिक चारित्रलब्धिधारकजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

क्षायिक चारित्र पाते हैं अरहंत ही।
चारित्रलब्धि प्राप्त करते भगवंत ही।।
घाति नाश अरहंत हो गए हैं नमन।
क्षय अघाति कर सिद्ध हुए उनको नमन।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकचारित्रप्राप्तक्षायिक चारित्रलब्धिधारकजिनेन्द्राय अर्घ्यं नि.।

महार्घ्य

छंद – मत्तसवैया

निष्कर्म दीप सम जलो सदा जग को प्रकाश बाँटो क्षण-क्षण।
सुरभित हो वसुन्धरा सारी धरती का नाच उठे कण-कण।।
जीवों की पीड़ा हरने का ही दया भाव उर में जागे।
हो पूर्ण अहिंसामय जीवन जब निज स्वभाव उर में जागे।।
मद मोह काम तिमिर व्योम रवि किरण त्वरित लख कर भागे।
बाह्यान्तर हो संयम प्रकाश निज परिणति हो आगे-आगे।।
पर परिणति पीछे रह जाए हो ज्ञान चेतनामय लक्षण।
निष्कर्म दीप सम जलो सदा जग को प्रकाश बाँटों क्षण-क्षण।।
विकसित हो हृदय कमल जैसा अंतर कलिकाएँ खिल जाएँ।
अज्ञान आवरण हट जाए तो गुण अनंत भी झिल जाएँ।।
श्रद्धा की महके मधुर गंध भ्रम की दीवारें हिल जाएँ।
पावन कल्याण भावना हो तो मुक्तिवधू भी मिल जाए।।

मत है व्यवहार कर्म का बहुभाँति आत्मा कर्त्ता।
उस पुद्गल कर्म का आत्मा विधि पूर्वक सदा भोक्ता।।

शुचितामय त्याग तपस्या हो हों विनय-शील के आभूषण।
निष्कर्म दीप सम जलो सदा जग को प्रकाश बाँटो क्षण-क्षण।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकचारित्रलब्धिधारकजिनेन्द्राय महार्घ्यं नि.।

जयमाला

छंद – चान्द्रायण

आत्मध्यान के लिए शुद्ध जल ज्ञान है।
ज्ञानी इसमें ही करता सुस्नान है।।
कर्म चेतना जग में भ्रमण करा रही।
ज्ञान-चेतना से होता निर्वाण है।।

जब संकल्प विकल्प जल्प होते नहीं।
निर्विकल्पता का होता बहुमान है।।
नवतत्त्वों का सार समय जो जानता।
वही हुआ अरहंत सिद्ध भगवान है।।

शुद्ध बुद्ध अविरुद्ध सिद्ध पद है सरल।
जिसे आत्मा के स्वरूप का भान है।।
वही जगत में निर्मल सम्यग्दृष्टि है।
निज अरु पर का जिसे भेद-विज्ञान है।।

क्रिया काण्ड में धर्म खोजना व्यर्थ है।
जबतक तत्त्व प्रतीति नहीं अज्ञान है।।
धर्म चेतना लक्षण तो है जीव का।
मोहादिक भावों से दुखी अजान है।।

अनुकम्पा आस्तिक्य प्रशम संवेग हो।
समदृष्टा की यही एक पहिचान है।।

जीव पुद्गल कर्म करे जो उनको ही जीव जु भोगे।
द्वय क्रियारूप यह आत्मा जिनमत में कभी न होवे।।

स्वपर भेद-विज्ञान परम सुख रूप है।
लोकालोक प्रकाशक केवलज्ञान है।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकचारित्रलब्धिप्राप्तक्षायिक चारित्रलब्धिधारकजिनेन्द्राय जयमालापूर्णार्घ्यं नि.।

आशीर्वाद

दोहा

संयम धर पाऊँ प्रभो, श्रेष्ठ लब्धि चारित्र।
हो जाऊँ हे नाथ अब, पावन परम पवित्र।।

इत्याशीर्वादः

卐

जीव पुद्गल दोनों भावों को करे तो आत्मा, मानो।
ऐसे द्वय क्रियावादि को मिथ्या दृष्टि ही जानो।

अंतिम महार्घ्य

छंद – समानसवैया

ज्ञानोदधि उद्वेलित होकर निज अंतर में उमड़ पड़ा रे।
आत्म-गगन में गर्जन करता निज चिन्मय घन घुमड़ पड़ा रे।।

समकित ने आठों अंगों से निज स्वभाव स्पर्श कर लिया।
अष्ट अंग सह सम्यग्ज्ञानी ने निजात्म का दर्श कर लिया।।
भ्रम तम की घन घोर तपन को एक समय में नष्ट कर दिया।
जो अनादि से अघ का बादल घिरा हुआ था नष्ट कर दिया।।
द्रव्य दृष्टि होते ही चेतन तो विभाव से अलग खड़ा रे।
ज्ञानोदधि उद्वेलित होकर निज अंतर में उमड़ पड़ा रे।।

इन्द्र धनुष-सी रंग-बिरंगी रागमयी छाया विलीन है।
शुद्ध बुद्ध निर्द्वंद्व चिदातम निज स्वभाव में हुआ लीन है।।
लक्ष्य प्राप्त करने को आतुर श्रेणी चढ़ने में प्रवीण है।
निज अनुभव रस शाश्वत पीकर राग उष्णता से विहीन है।।
सिद्धामृत की अजस्र धारा पीने को यह सहज उड़ा रे।
ज्ञानोदधि उद्वेलित होकर निज अंतर में उमड़ पड़ा रे।।

अष्टमदों को जीत लिया है अष्टम वसुधा भी पाएगा।
अष्टकर्म विध्वंस करेगा अष्ट स्वगुण निज प्रगटाएगा।।
निज आत्मानुभूति के द्वारा पूर्ण ज्ञान-रवि खिल जाएगा।
सादि-अनंत मोक्ष पाएगा मुक्ति-रमा से मिल जाएगा।।
त्रिभुवनपति का मुकुट सजेगा शुभ्र सुयश नव तिलक जड़ा रे।
ज्ञानोदधि उद्वेलित होकर निज अंतर में उमड़ पड़ा रे।।

मन-वच-काय त्रिगुप्ति समिति पाँचों से उर में दृढ़ता आती।
निश्चय पंच महाव्रत से ही तप संयम की क्षमता आती।।

उपयोग अनादि काल से है मोह युक्त यह जानो।
मिथ्यात्व अज्ञान व अविरति परिणाम तीन पहचानो।।

पंचाचारी हो जाते ही सकल जगत की ममता जाती।
जिनवाणी कल्याणी माता की छाया में समता आती।।
भेद-ज्ञान विज्ञान पूर्वक यह मंगल सोपान चढ़ा रे।
ज्ञानोदधि उद्वेलित होकर निज अंतर में उमड़ पड़ा रे।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकनवलब्धिधारकजिनेन्द्राय अंतिममहार्घ्यं नि.।

अंतिम महा-जयमाला

छंद – राधिका

सम्यग्दर्शन की जलधारा सुखकारी।
श्रद्धान आत्मा का है भवदुखहारी।।
सम्यग्दर्शन चंदन पाऊँ मैं शीतल।
भव ज्वर नाशूँ हो जाऊँ अभी समुज्ज्वल।।

सम्यग्दर्शन के अक्षत पाऊँ नामी।
अक्षय पद निज प्रगटाऊँ अन्तर्यामी।
सम्यग्दर्शन के पुष्प सुवासित पाऊँ।
चिर काम-बाण की पीड़ा पूर्ण मिटाऊँ।।

सम्यग्दर्शन के सुचरु चढ़ाऊँ स्वामी।
निज निराहार पद पाऊँ अन्तर्यामी।।
सम्यग्दर्शन के दीप जगाऊँ नामी।
मिथ्यात्व मोह की द्युति नाशूँ मैं स्वामी।।

सम्यग्दर्शन की धूप ध्यानमय लाऊँ।
आठों कर्मों को नाश करूँ सुख पाऊँ।।
सम्यग्दर्शन फल महामोक्ष फल पाऊँ।
आनंद अतीन्द्रिय सागर उर लहराऊँ।।

सम्यग्दर्शन के अर्घ्य बनाऊँ उत्तम।
पाऊँ अनर्घ्य पद सफल करूँ मैं निज श्रम।।

हो गया क्षीण यह मोह सदा को नाशा।
कैवल्य ज्ञान को मैंने त्वरित प्रकाशा।।

प्रभु ज्ञान ज्ञेय ज्ञायक होकर सुख पाया।
निज निजानंद रस पीकर मैं हरषाया।
फिर योग अभाव किया चौदहवाँ पाया।
उसको भी तज कर सिद्ध स्वपद दरशाया।।

जा त्रिलोकाग्र पर सिद्धशिला निज पायी।
त्रिभुवन ने मेरी महिमा प्रतिपल गायी।।
अब सादि-अनंतानंत काल तक प्रतिक्षण।
पाऊँगा शाश्वत सुख बनकर आनंदघन।।

दिव्यध्वनि ने रत्नत्रय के गुण गाए।
जो भव्यजीव थे पाकर बहु हरषाए।।
रत्नत्रय तरु का ध्रुव फल मैंने पाया।
कर्मादि अष्ट क्षय कर आनंद उठाया।।

सम्यग्दर्शन ही एक मात्र सुख दाता।
जो भी धारण करता है शिव सुख पाता।।
सम्यग्दर्शन से हो कर नाथ सुसज्जित।
मिथ्यात्व मोह वासना त्याग दूँ दूषित।।

उर सम्यग्ज्ञान सजाऊँ प्रभु अति निर्मल।
अज्ञान भाव नाशूँ हो जाऊँ उज्ज्वल।।
सम्यग्चारित्र तिलक को निज मस्तक पर।
अविरति प्रमाद क्षय कर दूँ निज प्रति झुक कर।।

रत्नत्रय के आभूषण हृदय सजाऊँ।
तेरह विधि पालन कर निजात्मा ध्याऊँ।।

जो भाव जीव खुद करता उस भाव का कर्त्ता बनता।
उससमय स्वयं पुद्गल ही कर्मत्वरूप परिणमता।।

दृढ़ सम्यग्दर्शन द्वारा शिव-सुख पाऊँ।
आठों कर्मों की ज्वाला अभी बुझाऊँ।।
यह राग आग अबतक दुख देती आयी।
कैवल्य ज्ञान की किरण न अबतक पायी।।
सप्तम षष्टम झूला झूलूँ हे स्वामी।
मैं अप्रमत्त बन निज में फूलूँ स्वामी।।
श्रेणी चढ़ने का भाव हृदय को भाया।
निज शुक्लध्यान का अवसर मैंने पाया।।
उपशम श्रेणी से गिरा छठे में आया।
कुछ दिन को स्वामी फिर शुभ पथ पर आया।।
क्षायिक-श्रेणी पाने की वेला आयी।
उर यथाख्यात की उत्तम तरंग पायी।।
लोकाग्र विराजित होऊँगा हे स्वामी।
निज सिद्ध स्वपद पाऊँगा अन्तर्यामी।।
जो कुन्दकुन्द का समयसार पाएगा।
वह निश्चित ही प्रभु मोक्ष सौख्य लाएगा।।

ॐ ह्रीं श्री क्षायिकनवलब्धिधारकजिनेन्द्राय अंतिमजयमालापूर्णार्घ्यं नि.।

शान्ति-पाठ

छंद – गीतिका

शान्ति पाने के लिए पायी तुम्हारी प्रभु शरण।
परम शान्त स्वरूप जिनवर तुम्हीं हो तारण तरण।।
विनय पूर्वक भक्ति से पूजे तुम्हारे प्रभु चरण।
परम शान्ति प्रदान कर दो विश्व को मंगल करण।।
नहीं कोई दुखी हो प्रभु सब सुखी हों स्वस्थ हों।
ज्ञान सम्यक् प्राप्त करके सभी प्रभु आत्मस्थ हों।।

पर को निजरूप करे जो निज को पररूप करे जो।
कर्मों का कारक बनता अज्ञानमयी जीव वो।।

सकल जग में शान्ति हो प्रभु सौख्य की धारा बहे।
न्यायपूर्वक चले शासन सुख सभी के उर रहे।।
प्रार्थना है यही जिनवर परम शान्ति महान दो।
दूर कर अज्ञान सबका शुद्ध ज्ञान महान दो।।
शान्ति का साम्राज्य पाएँ शान्ति हो प्रभु! हृदय में।
बिताएँ सुखमयी जीवन रहें निज के निलय में।।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्

जाप्य-मंत्र – ॐ ह्रीं श्री क्षायिकनवलब्धिधारकजिनेन्द्राय नमः

क्षमापना

छंद – गीत

मंगल विधान पूरा हुआ जिनराज।
ज्ञान का समुद्र पाया प्रभु मैंने आज।।
नाचा मेरा मन प्रभु नाची मेरी देह।
नाची मेरी भावना जागा तुम नेह।।
माता जिनवाणी ने भी दिया आशीर्वाद।
निज का स्वरूप देख हुआ आह्लाद।।
नव लब्धियों की विधि प्राप्त हो गई।।
शुद्ध आत्म-भावना भी व्याप्त हो गई।।
आपको नमन करूँ आपको प्रणाम।
माता भारती कृपा से पाऊँ ध्रुवधाम।।
क्षण में सफल हुए मेरे सारे काज।
मानो मैंने पाया आज निज पदराज।।

छंद – चौपाई

भूल हमारी क्षमा करो प्रभु। सम्यग्ज्ञान प्रदान करो विभु।
स्वस्थ बुद्धिशाली हों स्वामी। शिवपथ पाएँ अन्तर्यामी।।

पुष्पाञ्जलिं क्षिपेत्